Progress Report 2008

प्रगति प्रतिवेदन वर्ष २००८

Project Choupal

Promotion of Community Health through Capacity Building of PRI/Local Self Governance

परियोजना चौपाल

सामुदायिक स्वास्थ्य हेतु पंचायत और स्थानीय स्वशासी ईकाईयों का सशक्तिकरण

Reporting Period

Dec. 2007 to Nov. 2008

Project Supported by

SIR DORABJI TATA TRUST, MUMBAI

Project Implementing Organization

Community Development Centre [CDC], Balaghat

Opposite Maharishi Vidya Mandir
Near Lodhi Hostel, Bhatera
Balaghat M.P. 481 001 India
Phone : 07632 248040
Cell No. 09425822228
Email : cdcindia@rediffmail.com
Website : www.cdcmp.org

अनुक्रमणिका [Index]

प्रस्तावना *Forward*

गतिविधियॉ विवरण *Activity Details*

- नियोजित बनाम प्राप्त गतिविधियॉ *Activites Target VS Achieved*
- पंचायत प्रतिनिधियों का सशक्तिकरण *Strengthening of PRI Representatives*
- सृजन केन्द्र का प्रशिक्षण और बैठकें *Training and Meetings of Srijan Kendra*
- शालेय स्वास्थ्य कार्यक्रम *Programme on School Health Education*
- ग्राम स्वास्थ्य समितियों का सशक्तिकरण *Strengthening of Village Health Committee*
- सूचना मेला *Suchna Mela*
- पोषण और स्वास्थ्य दिवस *Nutrition and Health Day*
- स्वास्थ्य जागरूकता शिविर *Health Awarness Camp*
- गृहभेंट *Home Visits*
- नुक्कड नाटकों का आयोजन *Nukkad Natak*

अभियान *Campaigns*

- सूचना का अधिकार अभियान *Campaign on RTI*
- एड्स जागरूकता अभियान *Campaign on HIV/AIDS*
- आयोडीन नमक सर्वत्रीकरण अभियान *Campaign on Iodized Salt*

परियोजना प्रबंधन और *Project Management &*

- सहयोगी संस्था *Partner Organization*
- चुनौतियॉ और अवसर *Challenges and Opportunity*
- परियोजना स्टाफ की दक्षता वृद्धि *Capacity Building of Staffs*

दस्तावेजीकरण *Documentation*

पेयजल पर संपादित अध्ययन का प्रतिवेदन *Study on Safe Drinking water in Project area*

सफल प्रयास *Case and Success*

जहॉ जरूरत है जागरूकता की *Required More Attention*

आभार *Acknowledgement*

प्रस्तावना

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर हर्ष के साथ द्वितीय वर्ष का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रही है। हर्ष इस बात का है कि परियोजना स्टॉफ के सामूहिक प्रयास से परियोजना क्रियांवयन प्रभावी और परिणाम दायक रहा। सामूदायिक स्वास्थ्य के लिए स्थानीय ईकाईयों की संवेदनशीलता परियोजना क्षेत्र में बदलती हुई नजर आती है। आज पंचायतों की बैठक के एजेंडे में स्वास्थ्य नजर आता है, पंचायतें शौचालय निर्माण के साथ स्वच्छता, कुपोषण और टीकाकरण जैसे मूल विषयों पर चर्चा कर रही हैं। आज दो वर्ष के बाद इसे हम सफलता की ओर बढ़ते कदम के रूप में देख रहे हैं। आने वाले एक वर्ष के बाद पंचायतों में प्रतिनिधित्व में परिवर्तन होगा और उस समय देखना होगा कि नयी पंचायतें इन मुद्दों पर कैसे भूमिका निभायेंगी। यह एक चुनौती भी है क्योंकि बदलते हुए प्रतिनिधित्व को संवेदनशील और सामूदायिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर जागरूक बनाए रखना जरूरी है। हमारा प्रयास रहा है कि इन सब बातों को पंचायत की बैठक पंजियों में दर्ज किया जावे क्योंकि वहॉ से प्रयासों को आगे ही बढ़ाना होगा। दो वर्ष की अवधि पर्याप्त नहीं है कि परिस्थितियॉ एकदम बदल जावें। व्यवस्थाओं और कार्य परंपराओं से परिवर्तन की गति में अवरोध उत्पन्न होता ही है। इस मुद्दे पर लंबे समय तक कार्य करने की आवश्यकता है। जब तक स्थानीय ईकाईयों में दो तीन नेतृत्व परिवर्तन ना हो जावे।

हर्ष की वजह एक और भी है परियोजना क्षेत्र की पंचायत चीचगॉव का निर्मल ग्राम के रूप में चयनित होना, संस्था ने पंचायत के साथ मिलकर निर्मल ग्राम बनाने हेतु काफी प्रयास किये, मुख्य रूप से समुदाय को जागरूक और संवेदनशील बनाने में परियोजना स्टॉफ ने निरंतर प्रयास किये।

इस वर्ष अन्य मुद्दों पर भी परियोजना क्षेत्र में कार्य किया गया जिसके बारे में आगे प्रतिवेदन में विस्तृत विवरण है। सहभागी संस्था स्वास्थ्य संरक्षक समिति के साथ कार्य का अनुभव अच्छा है और इससे संस्था की सोच मजबूत होती है कि और छोटी छोटी संस्थाओं तथा ऐसे व्यक्तियों को कार्य से जोडने की आवश्यकता है जो स्वैच्छिक कार्य के विषय में सकारात्मक सोच रखते हैं और जिनमें काम करने का जुनून हो।

अमीन चार्ल्स
परियोजना निदेशक

संस्था द्वारा परियोजना के दूसरे वर्ष में और अधिक गंभीरता से कार्य किया गया पहले वर्ष की अपेक्षा कार्य करने में अधिक आसानी का अनुभव परियोजना कार्यकर्त्ताओं को हुआ क्योंकि स्टाफ का जुडाव परियोजना क्षेत्र के समुदाय से अधिक प्रगाढ़ हुए, पंचायत प्रतिनिधि और भाासकीय अधिकारी कर्मचारियों के बीच प्रभावी पॅहुच बनी। गॉव के लोगों के साथ विश्वसनीयता बढ़ी। क्षेत्र में परियोजना स्टॉफ की उपस्थिति लोगों के कौतुहल का विशय नहीं रह गया है। संस्था की पहचान समुदाय में बढ़ने से काम करना अधिक आसान हो गया है। शासकीय विभागों के साथ तालमेल का लाभ पंचायतों को भी प्राप्त हो रहा है। संस्था ने इन 6 पंचायतों को विभागीय प्राथमिकता की श्रेणी में लाया है। इन सब प्रोत्साही स्थितियों के बावजूद और कई क्षेत्र हैं जहॉ कार्य करने की आवश्यकता है जैसे ग्रामसभा के प्रभावी स्वरूप की हम केवल कल्पना कर पा रहे हैं। वास्तविक प्रभावी ग्रामसभाएं अभी संभव नहीं हैं। इसकी पर्याप्त वजह भी समझ में आती है क्योंकि जिन व्यवस्थाओं में लोग वर्शों से जी रहे हों उनका बदल पाना दो वर्श की छोटी सी समयावधि में संभव नहीं है। इस विशय पर धीरे धीरे और गंभीर रूप में कार्य करने की आवश्यकता है।

संस्था ने परियोजना की गतिविधियों के अलावा भी अनियोजित गतिविधियों पर भी कार्य किया जैसे स्वयं सहायता समूहों के गठन और सशक्तिकरण तथा उन्हें आय उर्पाजन के कार्यों तथा बैंकों से जोडने के लिए अथक प्रयास किये जिससे समूह मजबूत बने और समूह के सदस्यों की आय में वृद्धि हो जिसका परिणाम बेहतर स्वास्थ्य के रूप में दिखायी दे सके। परियोजना का हस्तक्षेप जिन विशयों को लेकर है यह लोगों की प्राथमिकता में नही है अतः समुदाय को लंबे समय तक इन मुद्दों से जोडने हेतु अन्य विशयों पर भी हस्तक्षेप की आवश्यकता है। आज परियोजना अपने आप को स्थापित करने में सफल हो रही है। विभिन्न शासकीय और अशासकीय विभागों के साथ परियोजना का तालमेल बना है जिसका लाभ आने वाले समय में लोगों को प्राप्त हो सकेगा।

परियोजना का अन्य विभागों के साथ जुडाव

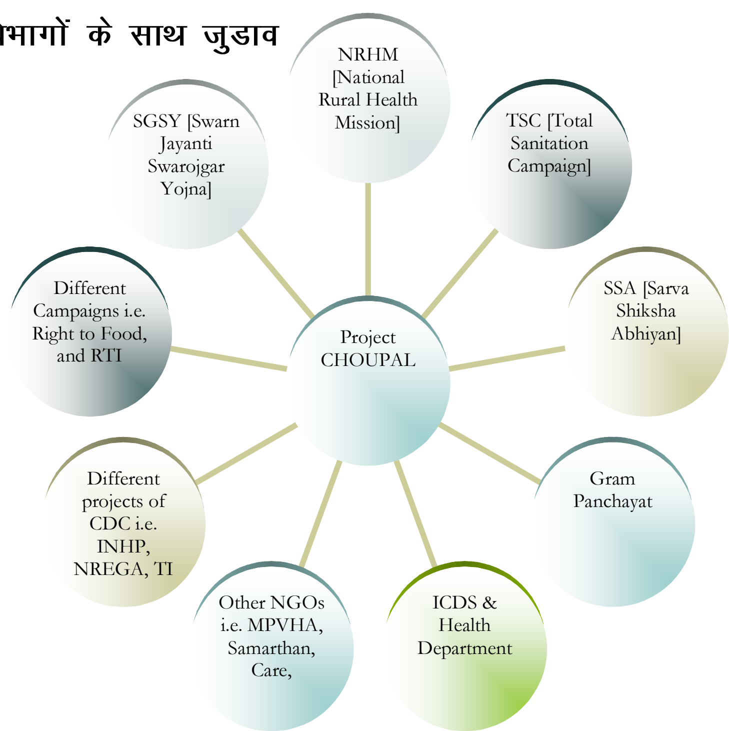

परियोजना की गतिविधियॉ

चौपाल परियोजना जिसका प्रमुख लक्ष्य स्थानीय स्वाशासी गतिविधियों को सक्षम और संवेदनशील बनाना जिससे समुदाय में प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य अधिकारों का संवर्धन संभव हो सके। परियोजना के द्वितीय वर्ष में संस्था ने समुदाय के स्वास्थ्य अधिकारों की प्राप्ति हेतु गंभीर प्रयास किये जिसके परिणाम धीरे धीरे परिलक्षित हो रहे हैं। पंचायतों में आमजनों की भागीदारी और बढ़ती विश्वसनीयता परियोजना के अंतर्गत निरंतर आयोजित की गयी विभिन्न गतिविधियों का ही परिणाम है। परियोजना स्टॉफ ने नियोजित गतिविधियों को समयानुसार और गुणवत्तापूर्ण तरीके से सम्पन्न किया, विगत वर्ष में प्रायः सभी गतिविधियों का आयोजन समय पर संभव हो पाया, कुछ कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप पहले या बाद में आयोजित किये गये। परियोजना गतिविधियों का विस्तृत विवरण आगे दिया गया है।

Project Implimentation Plan - YEAR II		QUANTITATIVE TARGET		
S.N.	**Activity**	**Proposed**	**Achieved**	**Reason for varience**
1	Training to women panchayat representatives	60 women representatives will be trained on role, responsibility and panchayat system	More than 60 women representatives trained in two round of trainings	No variance organized as per plan
2	Training to Village Health Committee on Community health & vill. Plan	160 VHC member will trained on role & resposibility and village health plan	110 VHC members trained	13 VHC has been formed in 6 Panchayats
3	Training to youth & adolescent for management of Srijan Samuh	180 youths from 18 villages will be trained	More than 200 youths trained	No variance organized as per plan
4	Formation of Srijan Samuh at Village level	18Srijan Kendra will be established	14 Srijan Kendra established	18 Srijan Samuh were formed 14 Samuh functioning
5	One day awareness camp on community health at village level	18 camps will be organized in 18 villages on community health and Govt. Schemes	18 Camps organized	No variance organized as per plan
6	One day camp on RTI & RTF at Panchayat level	6 one day camp will be organised in 6 panchayat on RTI & RTF	6 camps organized at the Panchayat level	No variance organized as per plan
7	Nukkad Natak at village level	18 Nukkad Natak will be organized	18 Nukkad Natak organized	No variance organized as per plan
8	Film Show at village level	36 Film shows in 18 villages	30 Film Shows organized	Due to electricity could not organized
9	Swasthya Suchna Mela at Panchayat level	6 Suchna Mela in 6 Panchayat will be organised	6 Suchna Mela organized at the Panchayat and cluster	No variance organized as per plan
10	Training on School health to teachers and youths	18 Teachers from 18 Villages will be trained	25 school teachers trained by the project	No variance organized as per plan
11	Monthly meeting [Project director + Partner Coordinator]	12 Meetings will be organized	11 Monthly meeting organized	No variance organized as per plan

Project Implimentation Plan - YEAR II		QUANTITATIVE TARGET		
S.N.	Activity	Proposed	Achieved	Reason for varience
12	Monthly meeting [reporting and monthyl plan at partner level]	12 Meetings will be organized	More than 20 meetings organized at the project level	No variance organized as per plan
13	Review meeting at project level [quarterly]	4 Review meeting at project level	4 Review meeting organized	No variance organized as per plan
14	Project Documentation	1 Document & Half yearly reports	Document on Village Health Plan has been prepared, One small study on drinking water and quarterly progress reports prepared	No variance organized as per plan
15	Home Visit [Community Organizer]	540 House hold contacted by the community organizes	More than 700 house hold contacted by the project staffs	No variance organized as per plan
16	Nutrition and Health Day	180 NHD will be organised	100 NHD attended by the project staffs	180 NHD organized but attended 100 NHD
17	Meeting of Village Health Commitee	60 Meetings will be organised during the year	Atleast 50 meetings of the 13 VHC organised by the staff	At least 5 meetings of each VHC has been organized
18	Cluster Level Meeting (PRI, AWW, ANM)	24 cluster meetings will be organised by the staff	19 cluster meetings attended by the staff	Cluster meetings attended by the staff
19	Meetings with SHG/Bal Samuh	216 Meetings will be organised during the year	More than 250 meetings of Srijan Kendra and SHG organized by the project staff	No variance organized as per plan

सृजन केन्द्र का प्रशिक्षण और बैठकें

दिनांक 23.11.08 को लालबर्रा में कम्युनिटी डेव्हलपमेन्ट के परियोजना कार्यालय में सृजन केन्द्र के सदस्यों का प्रशिक्षण किया गया। इस प्रशिक्षण में परियोजना क्षेत्र की पंचायत बहियाटीकुर चीचगॉव साल्हे, टेकाडी, रानीकुठार धारावासी, के सजृन केन्द्र के सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया यह प्रशिक्षण सृजन केन्द्र के सदस्यों की क्षमता वृद्धि के लिए किया गया ।

प्रशिक्षण के दौरान सजृन केन्द्र का उद्देश्य

1. युवा संगठन
2. जानकारियों के भंण्डार के लिए
3. क्षमता वृद्धि
4. पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना ।
5. सामुदायिक विकास
6. गॉव की छोटी–छोटी समस्याओं को चिन्हित करना ।

प्रशिक्षण के दौरान सदस्यो को बताया गया कि गॉव के विकास एवं गॉव में जागरूकता और गॉव के लोगों को जानकारियों या विभिन्न प्रकार की योजनाओं की जानकारी रहे इसलिए सजृन केन्द्र का निर्माण किया गया हैं इसके लिए जरूरी हैं कि पहले सजृन केन्द्र के सदस्यों की क्षमता वृद्धि हो उन्हें सम्पूर्ण योजनाओं की जानकारी हो ताकि वे गॉव के लोगो को जानकारी दे सके । सदस्यों को बताया गया कि गॉव के विकास एवं उनके खुद के विकास के लिए यह एक अच्छा अवसर हैं ।

सामुदायिक विकास के लिए गांव की छोटी–छोटी समस्याओं को चिन्हित करना चाहिए एवं उसके उपर कार्य करना चाहिए जिससे छोटी छोटी समस्या सुलझ सके ˙ सजृन केन्द्र के सदस्यों को कहा कि उन्हें ऐसा कार्य करना चाहिए जिसमें उनकी आमदनी हो सके । सदस्यों को बताया गया कि उन्हे कोई आमदनी नही हैं लेकिन आगे कुछ ऐसे छोटे छोटे कार्य करें जिससे उनकी आमदनी हो । उन्हें बताया गया कि गॉव में अशुद्ध पेयजल से कई रोग उल्टी, दस्त हैजा डायरिया होते हैं इन रोगों के उपर लाखों रू. खर्च किये जाते हैं जिससे आर्थिक स्थिति डगमगा जाती हैं ऐसे खर्चे से बचने के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए रोगों बीमारियों से बचने चाहिए बीमारियों से बचने के लिए शुद्ध पानी का उपयोग करना चाहिए प्रत्येक परिवार को शौचालय का उपयोग करना चाहिए ।

सजृन केन्द्र के सदस्यों को विभिन्न प्रकार की योजनाओं के बारे में बताया गया जैसे– एन.आर.ई.जी.ए., आर.टी.आई, पी.डी.एस. पंचायत द्वारा स्वास्थ्य योजनाओं के बारे में बताया गया एन.आर.ई.जी.ए., के बारे में बताया गया कि इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक परिवार को 1 वर्ष में 100 दिन का रोजगार मिलता हैं यदि 100 दिन का रोजगार नही मिला तो बेरोजगारी भत्ता प्राप्त कर सकते हैं जिन लोगो को काम की जरूरत हैं वे पंचायत में आवेदन देकर पावती लेना साथ ही 15 दिवस के भीतर काम पंचायत द्वारा मिलेगा यदि नही मिला तो भत्ता प्राप्त किया जा सकता हैं । सजृन केन्द्र के सदस्यो को बताया गया कि वे गॉव के लोगो को इस सजृन केन्द्र के सदस्यो

को बताया गया कि व`लोग को योजना के बारे में बताकर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं सजृन केन्द्र के सदस्यो को बताया गया कि सूचना के अधिकार एक ऐसा कानून है। जिसका उपयोग गॉव का प्रत्येक नागरिक कर सकता हैं इस कानून के अंतर्गत वह किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकता हैं यह कानून शासन के कार्यो में पारदर्शिता खुलापन एवं आम जनता को उनका अधिकार प्राप्त हो इस उद्वेश्य से यह कानून को लागू किया गया । इस कानून के अन्तर्गत किसी विभाग से जानकारी लेने के लिए या दस्तावेजो की फोटोकापी के लिए ए.पी.एल. परिवार को सरकार द्वारा निर्धारित फीस लगती हैं बी.पी.एल. परिवार को किसी प्रकार की फीस नही लगती हैं।

सृजन के सदस्यो को बताया गयाकि वे इस कानून का उपयोग कर सरकारी कामो में पारदर्शिता ला सकते हैं । जिन गरीब परिवारो को शासन से उपलब्ध सार्वजनिक खाद्य सामग्री उपलब्ध नही हो पाती उसे आर.टीआई पर आवेदन लगाकर उचित मात्रा में राशन दिलावा सकते हैं

इसी प्रकार योजनाओ ंका प्रचार–प्रसार कर समुदाय को जागरूक एवं उनकी सहायता कर सकते हैं

सजृन केन्द्र के प्रशिक्षण के दौरान आगे की कार्यायोजना

- मासिक बैठक माह मे दो बार
- प्रतिदिन केन्द्र खोलने हेतु प्रयास
- सजृन केन्द्र की जानकारी गॉव मे हो इस हेतु प्रयास
- ऐसी समस्या को चिंहित करना जिससे लोगो को बहुत हानि होती हो पंचायत में सजृन केन्द्र द्वारा रखना ।
- सजृन केन्द्र में न्यूज पेपर, रोजगार समाचार, रोजगार निर्माण, पत्र पत्रिकाएँ बुलवाना

इस प्रकार सजृन केन्द्र के प्रशिक्षण का समापन किया गया ।

सृजन समूह की बैठकें

परियोजना क्षेत्र के सभी गांवो में किशोर किशोरियों को संगठित करने नेतृत्व कौशल विकास करने क्षमता वृध्दि करके उनमें अच्छे संस्कार की नींव डालने, सृजनात्मक सोच में बदलाव लाने ग्राम विकास में सहभागी बनाने एवं गांव में सूचनाओं एवं जानकारियों के प्रचार प्रसार को बढ़ाना देने के उद्देश्य से सृजन समूह का गठन किया गया है और इसी चलते सृजन केन्द्रों पर संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा सदस्यों के साथ बैठकें की गई। इन बैठकों के लिये प्रत्येक माह की बैठक की कार्ययोजना बनाई गई है और उसी कार्ययोजना के तहत सभी केन्द्रों पर बैठकें की जाती हैं जो बैठकें की गई उसकी कार्ययोजना (बैठक मुद्दे) इस प्रकार हैः–

सृजन समूह :

बैठक में चर्चा के मुद्दे :

- हर माह नियमित बैठक होना चाहिए ।
- बैठक में सभी सदस्य उपस्थित होना चाहिए ।
- गॉव में स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्य करना चाहिए ।
- समिति के खाते में राशि हेतु स्वास्थ्य विभाग में आवेदन लगाने संबंधी चर्चा ।
- ग्राम पंचायत चिंचगॉव में आशा कार्यकर्ता द्वारा चर्चा के दौरान निर्णय लिया गया कि वे खाते में राशि हेतु स्वास्थ्य विभाग में आवेदन लगाया जाये ।
- पोषण एवं स्वास्थ्य दिवस में वी.एच.सी. सदस्यों की भागीदारी होना चाहिए ।
- नवाचार कार्यक्रमो में वी.एच.सी. सदस्यों की उपस्थिति हो एवं माह के प्रत्येक मंगलवार को नवाचार कार्यक्रम ऑगनबाडी केन्द्र में होना चाहिए ।
- खाते में आई राशि का उपयोग हेण्ड पम्प के पास शोक गढ्ढा बनाने हेण्ड पम्प को रिपेयरिंग कराने एवं गर्भवती महिला की डिलेवरी करने में खर्च किया जाएगा ।
- स्कूल में स्वच्छता संबंधी बाते बच्चों को देने के लिए वी.एच.सी. सदस्यों द्वारा शिक्षकों से बात करना चाहिए

प्रभाव :

- हर माह नियमित बैठक हो रही हैं एवं बैठक में सभी सदस्यों की उपस्थिति बडी हैं ।
- ग्राम पंचायत चिंचगॉव साल्हे, टेकाडी, रानीकुठार में सजृन समुह हर माह 25रू. की राशि जमा कर बचत कर रहे हैं ।
- ग्राम चिंचगॉव में आगनबाडी केन्द्र में नवाचार नहीं हो रहा था सजृन समुह के सदस्यों द्वारा बार बार कहने पर भी नवाचार कार्यक्रम नहीं होता था सजृन समूह द्वारा आर.टी. आई पर आवेदन लगाया गया देखा गया कि अगले मंगलवार से नवाचार कार्यक्रम होने लगा गर्भवती महिलाओं की गोदभराई बच्चों का जन्मदिन एवं अन्नप्राशन होने लगा एवं किशोरियों को प्रशिक्षण भी दिया जाने लगा हैं ।
- ग्राम चिंचगॉव , धारावासी, रानीकुठार, में हेंडपम्प के पास शोक गढढा न होने की वजह से गंदगी ज्यादा हो जाती हैं । सजृन समूह द्वारा निर्णय लिया गया कि हेंड पम्प के पास सोखता गड्ढा बनाने के लिए पंचायत में आवेदन लगाया जाये ।
- ग्राम खैरगोंदी टेकाडी, धारावासी, में रोजगार गांरटी योजना के अंतर्गत बेरोजगारों को सृजन समूह द्वारा आवेदन लगवा कर रोजगार दिलाया गया ।
- ग्राम खैरगोंदी, चिंचगॉव में सृजन समूह द्वारा बी.पी.एल. परिवारों में शौचालय निर्माण के लिए आवेदन लगवाया गया।
- ग्राम साल्हे एवं चिंचगॉव के सृजन समूह के सदस्यों द्वारा निर्णय लिया गया कि वे ऐसे छोटे छोटे कार्य करेंगे जिससे उनके समुह में आमदनी होगी ।
- ग्राम खैरगोंदी में सजृन समूह द्वारा ग्रहभेंट कर महिलाओं को एकत्रित कर स्व–सहायता समूह का गठन किया गया ।
- परियोजना क्षेत्र के सभी गॉवो में पोषण एवं स्वास्थ्य दिवस में एवं नवाचार कार्यक्रमो में समिति के सदस्यों की उपस्थिति देखी जा रही है

इस तरह सृजन समूह के सदस्यों को संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा बैठकों के माध्यम सक्रिय व संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जा रहा है। सृजन समूह के सदस्य अपने गांव की छोटी छोटी समस्याओं पर विचार करने लगे हैं, और निराकरण के लिये प्रयास करने लगे है। जैसे सृजन

समूह रानीकुठार के सदस्यों ने अपनी बैठक में गांव की समस्याओं को चिन्हित कर गांव के बीचों बीच स्थित हेण्डपंप को उपयोग गांव के लोग करते है पानी के उपयोग के समय बचा हुआ गंदा पानी फर्श के बाहर से निकलकर सड़क पर फैल जाता है था जिसके कारण सड़क पर आने जाने वालों को परेशानी होती थी। और इस गंदगी पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा था। उस पर सृजन समूह के सदस्यों ने अपने प्रयासों से हेण्डपम्प के पास एक सोखता गड्डा सामाजिक सहभागिता से बनवा दिया, और इसी तरह के अन्य कार्यों के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

शालेय स्वास्थ्य कार्यक्रम

शालेय गतिविधियॉ एवं शिक्षक प्रशिक्षण

चौपाल परियोजना के अन्तर्गत गॉव में महिला पुरूष एवं बच्चों के साथ स्वास्थ्य एवं विकास के मुददों को लेकर कार्य किया जा रहा हैं। कार्य के दौरान स्कूल के बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास तथा बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य आदतों के विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों की क्षमता वृद्धि के लिए 6 पंचायतो के 25 स्कूलों से 25 शिक्षकों को प्रशिक्षण देने का तय किया गया। प्रशिक्षण के लिए शिक्षकों से बात की गई इस कार्य से ग्राम पंचायतों को जोडा गया जिससे ग्राम के सरपंच द्वारा ही शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण में उपस्थिति हेतु पत्र निकाला गया।

चौपाल कार्यालय लालबर्रा में टीचर्स ट्रेनिंग रखी गई जिसमें 6 पंचायतों के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया । शिक्षकों को बताया गया कि प्राथ. स्कूल के लिए बच्चों को शारीरिक अंगो की पहचान व अंगो का उपयोग के बारे में बताया जाना चाहिए । जैसे – हाथ का उपयोग, भाारीरिक स्वच्छता व भोजन करने के लिए किया जाता हैं। इसी प्रकार शरीर के अंगो की पहचान व उनका प्रयोग बच्चों को बताना बहुत जरूरी हैं क्योंकि बच्चों को अंगो के नाम तो मालूम होते है। लेकिन उनका उपयोग ज्ञात नही होता।

बच्चों को सफाई का महत्व को बताया जाना चाहिए क्योकि सफाई का संबंध स्वास्थ्य का संबंध आय से हैं क्योंकि स्वास्थ्य के लिए या बीमारियों के पीछे परिवार की आय का 20 से 60 प्रतिशत तक खर्च कर देते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है।

जैसे –

- बच्चो में अच्छी आदतें
- स्वास्थ्य हेतु चर्चा
- बच्चों को सामान्य स्वास्थ्य की जानकारी देने जैसे मलेरिया दस्त हैजा कैसे होता हैं ।
- शालेय परिसर की स्वच्छता
- पीने के लिए पानी की स्वच्छता, रख रखाव संबंधी जानकारी बच्चों को स्वास्थ्य व स्वच्छता के बारे में बताने के दौरान कुपोषण भी चर्चा की गई ।

बालाघाट जिले में 55 प्रतिशत कुपोषित बच्चे हैं जिसमें सामान्य में 45 प्रतिशत बच्चे हैं जिन्हें प्रथम ग्रेड से सामान्य में आने के लिए 500 ग्राम अतिरिक्त पोषण आहार की जरूरत हैं । किसी बच्चे का वजन उम्र से तिगुना होना चाहिए, बच्चों का वजन पोषण आहार खानपान पर निर्भर है । बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी बताया गया बताया गया कि आयोडीन नमक की कमी से मानसिक विकास में कमी आती हैं यह भी जानकारी दी गई कि किसी भी मनुश्य का 35 प्रतिशत विकास गर्भावस्था में 35 प्रतिशत विकास 1 वर्ष में और 2.5 वर्षो में शेष विकास होता हैं।

प्रशिक्षण में बताया गया कि बच्चों के शारीरिक विकास एवं मनोवैज्ञानिक विकास पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए बच्चों पर ज्यादा मानसिक एवं शारीरिक दबाव नहीं डालना चाहिए। । उन्हें 5–14 वर्ष तक किसी भी प्रकार का दबाव नही डालना चाहिए क्योंकि इसी उम्र में बच्चे का विकास होता हैं । ऐसा काम कराने से उनमें हीन भावना उत्पन्न होती हैं उनकी सोच में अन्तर आ जाता हैं। इस उम्र में बच्चो की पढाई पर भी ज्यादा प्रभाव देखने को मिलता हैं बच्चो की पढाई के विषय में टारगेट नही देना चाहिए । बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के लिए पेंटिग संगीत क्लास, कम्प्युटर, खेल आदि पर ध्यान देना चाहिए । कुपोषण बच्चों के मानसिक शारीरिक विकास संबंधी चर्चा के दौरान स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए बताया गया कि खुले में शौच नहीं करना चाहिए क्योंकि खुले में शौच करना हानिकारक होता हैं 1 ग्राम मल एक परमाणू बम के बराबर होता हैं खुले में शौच करने पर जमीन पर शौच रहता हैं जो हवा के माध्यम से मनुष्य के पैर, जानवरों के पैरों द्वारा गॉव में आ जाते हैं और मिट्‌टी व रेत में शामिल होकर गंदगी फैल जाती हैं । चर्चा के दौरान बताया गया कि बच्चों के नाखून कटे हुए होना चाहिए । क्योकि लम्बे नाखून हानिकारक होते है बच्चे मिट्‌टी में खेलते हैं गंदगी नाखूनों में घुस जाती है और ठीक से हाथ न धोने के कारण पेट में गंदगी चली जाती हैं साथ ही बताया गया कि बच्चे मिट्‌टी न खाये, चॉक न खाये क्योंकि मिट्‌टी खाने से बच्चों में कृमि होते हैं और कृमि पोषक तत्व को नष्ट कर देती है बच्चे भोजन के साथ जो भी पोषक तत्व लेते हैं। कृमि उन्हें नष्ट कर देती है जिससे बच्चा कुपोषित हो जाता है।

कुपोषण कम करने के लिए व बीमारी से बचने के लिए 50 प्रतिशत पानी की जरूरत पड़ती हैं एक स्वस्थ्य शरीर को 24 घण्टे में 6–10 लीटर पानी की जरूरत पडती हैं । इसलिए पानी प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए और शुद्ध पानी का ही उपयोग करना चाहिए। अशुद्ध पानी से उल्टी, दस्त, पीलियॉ, हैजा, कृमि जैसी बिमारियॉ उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार शिक्षकों को स्वास्थ्य एवं कुपोषण, शुद्ध पेयजल के विषय में चर्चा की गई और आगे बच्चों द्वारा स्कूल व घर में स्वच्छता संबंधी गतिविधियॉ कराने के लिए कार्ययोजना बनाई गई ।

कार्ययोजना

क्र	शाला पर		घर पर
1.	व्यक्तिगत स्वच्छता – मध्यान्ह भोजन से पहले हाथ धोना, नाखुन, बाल गणवेश की सफाई		दांत, आंखो की सफाई
2.	शाला परिसर की स्वच्छता		शरीर की सफाई
3.	पीने के पानी के स्त्रोतो को गंदा होने से बचाना		घर मे पीने के पानी के स्त्रोत को गंदा होने से बचाव हेतु बच्चो में आदते
4.	पेंटिग		पेंटिग
5.	गॉव भ्रमण		गॉव भ्रमण
6.	गीत, संगीत स्वास्थ्य संबधी		
7.	हाथ धुलाई		

प्रशिक्षण का उद्‌देश्य था शिक्षकों की क्षमताओं और सोच में परिवर्तन लाना जिससे वे बच्चों को किताबी ज्ञान के अलावा भी जानकारियॉ प्रदान करें बच्चे शाला में खेलखेल में काफी नयी बातें सीख जाते हैं और अच्छी आदतों के विकास में भाला का प्रमुख योगदान रहता है। सभी शालाओं में शालेय स्वास्थ्य पर किताबें भी संस्था की ओर से उपलब्ध करायी गयी हैं जिससे शिक्षक सप्ताह में एक कालखंड बच्चों को स्वास्थ्य पर शिक्षित कर सके।

ग्राम स्वास्थ्य समितियों का सशक्तिकरण

वर्तमान समय में किसी भी ग्राम की स्वास्थ्य संबंधी व्यवस्थाओं, समस्याओं और समस्याओं के समाधान में ग्राम स्वास्थ्य समितियों की भूमिकाएं महत्वपूर्ण हो रही है। परियोजना के प्रारंभ होने के बाद राश्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मि”ान के तहत हर ग्राम में ग्राम स्वास्थ्य समितियों के बनाये जाने की प्रकियाएं प्रारंभ हुई। पर अन्य सरकारी कार्यक्रमों की तरह ही ग्राम स्वास्थ्य समितियों का गठन में भी स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा फर्जीवाडा किया जाने लगा। चूंकि संस्था ने विगत वर्श ही ग्राम स्वास्थ्य समितियों का गठन परियोजना क्षेत्र के गॉवों में कर रखा था अतः इन गॉवों में विधिवत नियमानुसार समितियों का गठन संभव हो सका। संस्था ने समितियों में महिलाओं को पर्याप्त संख्या में रखा है साथ ही एक वर्श के अथक परिश्रम से गॉव के सकिय लोगों की पहचान कर इन समितियों का सदस्य बनाया है। समितियों का अनुमोदन ग्रामसभा के करवाकर इन्हें पर्याप्त वैधानिक रूप देने की कोि”ा”ा की गयी है।

समितियों को सक्रिय करने में काफी परे”ाानियों का सामना करना पड रहा है जिसमें विभागीय कर्मचारी प्रमुख हैं क्योंकि यदि समितियॉ सक्रिय होंगी तो उनके हित प्रभावित होते हैं और उन्हें अपने कामों को जिम्मेदारी से पूरा करना पडता है। संस्था ने जिले स्तर पर एन.आर.एच.एम. से बेहतर तालमेल बनाते हुए परियोजना क्षेत्र में सक्षम ग्राम स्वास्थ्य समितियों के गठन को सुनि”चत किया है जो वास्तव में धरातल में दिखायी देती हैं। पूरे जिले के परिदृ”य को देखें तो जहॉ जिले में लगभग 1200 ग्राम स्वास्थ्य समितियॉ होनी चाहिए वहॉ केवल 600 समितियों के गठन की बात सामने आ रही है जिसमें लगभग 95 प्रति”ात समितियॉ कागज में ही बनी हुई हैं। चूंकि इन समितियों को सीधे पैसे भी प्राप्त होने हैं अतः विभागीय कर्मचारी भी चाहते हैं कि समितियॉ उनके हाथ की कठपुतली बनी रहें जिससे उन्हें इसका लाभ मिल सके।

लालबर्रा विकासखंड में केवल परियोजना की 6 पंचायतें हैं जहॉ समितियॉ कार्य कर रही हैं जो गॉव के स्वास्थ्य संबंधी विशयों से सकोकार रखती हैं अन्यथा किसी पंचायत में स्वास्थ्य समितियॉ कार्य नहीं कर रही हैं हम भी इस सफलता के प्रथम चरण में ही हैं क्योंकि इन समितियों को दी जाने वाली रा”ायों के उपयोग हेतु मार्गद”िका जिले से ही तय हो रही है। परियोजना का विचार है कि समितियॉ अपने गॉव के लिए ग्राम स्वास्थ्य नियोजन का कार्य करें और अपनी आव”यकता के अनुसार संसाधनों का प्रयोग कर सके। संस्था इन समितियों की निरंतर बैठकों और प्र”ाक्षण के माध्यम से इन समितियों की क्षमता वृद्धि कर रही है जिससे ये समितियॉ बेहतर तरीके से कार्य कर सकें।

ग्राम स्वास्थ्य समितियों का प्रशिक्षण

परियोजना क्षेत्र की छः पंचायतों में ग्राम के विकास, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए ग्राम स्वास्थ्य समिति का गठन किया गया । इन समितियों की हर माह बैठकें भी की जा रही हैं समिति के सदस्यों की क्षमता वृद्धि के लिए प्रशिक्षण तय किया गया प्रशिक्षण कराने के पहले

समिति के सभी सदस्यों को बैठकों एवं ग्रहभेट के माध्यम से बताया गया । संस्था के परियोजना कार्यालय लालबर्रा में ग्रम स्वास्थ्य समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण रखा गया इस प्रशिक्षण में ग्राम पंचायत साल्हे, चिंचगॉव, टेकाडी, रानीकुठार धारावासी, बहियाटीकुर के 13 ग्राम स्वास्थ्य समितियों के सदस्यों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया इस प्रशिक्षण में कुल 50 सदस्यों ने भाग लिया ।

प्रशिक्षण के दौरान सदस्यों को गांव की स्वच्छता दूषित पानी से होने वाले रोग, स्वच्छ पानी शौचालय व समितियों का प्राप्त होने वाले फण्ड के सही उपयोग के बारे में बताया गया । प्र"िक्षण में बताया गया कि समिति के सदस्यों को ग्राम की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना है, दूषित पानी पीने से कई प्रकार के जल जनित रोग जैसे – हैजा, डायरिया, उल्टी, दस्त होते हैं इस प्रकार के रोग से बचाव करने के लिए मनुष्य लाखों रू. खर्च कर डालता हैं । अधिकतर देखा गया कि बरसात के दिनों में गॉव में गंदगी व दूषित जल पीने से रोग होते हैं अधिकतर बच्चो में उल्टी, दस्त, होते हैं और बच्चों की मृत्यु हो जाती हैं प्रशिक्षण के दौरान सदस्यों को बताया गया कि गॉव में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते हुए गॉव के लोगो को भी समझाये कि वे शुद्व पानी पीये पानी को छानकर एवं उबालकर पीये ताकि उल्टी दस्त जैसे रोगो से बचा जा सकता हैं । गॉव में बने हेण्ड पम्पो के पास गंदगी न रखे शोक गढढा बनाया जाये प्रशिक्षण के दौरान बी.ई मेडम द्वारा बताया गया कि घरों में शौचालयो का प्रयाग करना चाहिए बताया गया कि बाहर शौच करने से कई प्रकार के रोग मल जनित होते हैं क्योकि मल में करोडो रोगाणु पाये जातेहैं।

बताया गया कि कई लोग पैसा नही खर्च करना चाहते हैं और शौचालय नही बनाते हैं लेकिन बीमारी होने पर लाखों रूपया खर्च कर देते हैं इस बीमारी से बचने व लाखों रू. करने के बजाय हजार रू. खर्च करके शौचालय बनाया जा सकता है बताया गया कि शौचालय बनाने के लिए बी. पी.एल. परिवारों को पंचायत से जो राशि मिलती हैं उस राशि का उपयोग कर शौचालय निर्माण योजना के तहत मिलने वाली राशि का उपयोग करके शौचालय बनाना चाहिए ।

जिस परिवार को इस योजना का लाभ नही मिल रहा हैं और जो पक्का शौचालय नहीं बना पा रहे हैं वे गढढा खोदकर आस–पास कपड़ा लगाकर शौच कर सकते है लेकिन बाहर शौच नही करना चाहिए । प्रशिक्षण में बताया गया कि समिति के अध्यक्ष, सचिव व सदस्यों को हर माह बैठक करके बैठकों के दौरान छोटी छोटी योजना बनाकर गॉव के विकास में कार्य करने की आव"यकता है।

गॉव में बने स्कूलो में बच्चो के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए बच्चों की शारीरिक स्वच्छता स्कूल की साफ सफाई के उपर शिक्षकों से बात करनी चाहिए । आंगनवाडी में बच्चों को उचित मात्रा व अच्छा पोषण आहार मिले इस पर ध्यान देना चाहिए । माह में होने वाले स्वास्थ्य पोषण दिवस के दिन सभी हितग्राही को सेवा मिले ध्यान देना चाहिए । प्रशिक्षण के दौरान बताया गया कि समिति के खाते में जो राशि आई है या जो राशि आयेगी उसका सही व पारद"र्ी तरीके से उपयोग करने की आव"यकता है।

आशा कार्यकर्ताओं ने बताया कि उनके खाते में 3000.00 रू. की राशि आयी जिसमें 1500.00 रू. की राशि का उपयोग हेल्थ केम्प में किया गया हेल्थ केम्प में महिलाओं एवं बच्चों को दवाईयॉ दी गई एवं डॉक्टर की फीस दी गई ।

सदस्यों को बताया गया कि खाते में आई राशि का उपयोग गॉव के विकास में गरीब गर्भवती की डिलेवरी, हेण्ड पम्प के पास सोखता गडढा बनवाने में, आव”यक हेल्थ केम्प के आयोजन में की जा सकती है। प्रशिक्षण के दौरान आशा कार्यकर्ताओं ने कहा कि उनकी तनख्वाह नही है फ्री में काम करते हैं आशा कार्यकर्ताओं को बताया गया कि **पूना के परिंचे** ग्राम में गांव के स्वास्थ्य के लिए महिलाओं का संगठन बना हुआ है जिन्हे वहॉ सभी लोग ताई कह कर पुकारते हैं। उसी प्रकार आशा कार्यकर्ता संगठित होकर गॉव के स्वास्थ्य के लिए कुछ कर सकती हैं । इस प्रकार प्रशिक्षण में ग्रम स्वास्थ्य समिति के सदस्यों को एकता के साथ साथ गॉव के विकास में काम करने को कहा गया।

ग्राम स्वास्थ समिति की बैठक :

परियोजना के प्रयास से ग्राम स्वास्थ्य समिति के साथ सक्रियता से कार्य किया जा रहा हैं जिससे कि समिति स्वास्थ्य के मुद्दों को चिन्हित कर सके और समिति की समझ बढ़े इसलिए इन समितियों के साथ लगातार बैठकें आयोजित की जा रही है ताकि इनकी क्षमता वृद्धि हो सके, समितियॉ वास्तविक रू" में सक्षमता के साथ कार्य कर सकें। विगत एक वर्श में आयोजित बैठकों में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गयी।

बैठकों के मुख्य बिन्दु :

- ग्राम स्वास्थ्य समिति के उद्देश्य, उत्तरदायित्व, कर्तव्य एवं सदस्यों की मुख्य जिम्मेदारियों पर सदस्यों की समझ बनाने का प्रयास।
- ग्राम स्वास्थ्य समिति को ग्राम सभा द्वारा अनुमादित कराना।
- समिति का प्रबंधन व बैठकें निश्चित समय व तिथि पर नियोजित करना व स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं का सहयोग करना।
- गॉव में साफ पीने के पानी की उपलब्धता व जल जनित/मल जनित रोगों के रोकथाम हेतु गॉव में प्रयास करना ।
- गॉव का वातावरण स्वस्थ्य बनाने हेतु शौचालय निर्माण की प्रक्रिया व समिति के सदस्यों द्वारा आगनबाड़ी में पोशण व स्वास्थ्य दिवस में पूर्ण रूप से भागीदारी होना ।
- समिति में समय पर राशि जमा हो इस हेतु प्रयास करना वा उस राशि से असहाय महिला की मद्द, स्वच्छता संबंधी आदि कार्य करवाने की माहवार कार्ययोजना समिति द्वारा बनाई जाए।

प्रभाव :

- ग्राम स्वास्थ्य समिति की नियमित बैठके प्रांरभ हुई हैं तथा समिति की सामुदायिक स्वास्थ्य पर समझ बनने लगी है।

- परियोजना क्षेत्र में ग्राम स्वास्थ्य समिति के सदस्यों की पोषण व स्वास्थ्य दिवस में उपस्थिति देखी गई हैं व उनकी भागीदारी भी हुई है ।
- राशि खाते में जमा न होने के कारण चीचगॉव आशा कार्यकर्ता ने सूचना के अधिकार का प्रयोग कर खाते में राशि जमा करवाई ।
- समिति के सदस्यों ने परिवारों को चिंहित किया जिसमें खुले कुएॅ थे उन्हें उसका उपचार बताया व पानी से होने वाली बीमारियों की जानकारी दी जा रही है ।
- राशि का व्यय कैसे और कहॉ करना हैं इसकी समझ समिति को बढ़ी है ।

चुनौतियॉ :

तमाम प्रयासों के बावजूद विभिन्न प्रकार की चुनौतियॉ सामने हैं जो ग्राम स्वास्थ्य समितियों को सक्षम और प्रभावी बनने से रोकती हैं सामूदायिक स्तर पर कम लेकिन प्र”ाासनिक स्तर पर चुनौतियॉ अधिक देखने को मिल रही हैं।

- समिति के सदस्यों की समझ में कमी के कारण उन्हें उनकी उत्तरदायित्व समझाने में परेशानी हुई । स्वैच्छिक प्रयासों की कमी स्पश्ट झलकती है लोग व्यक्तिगत लाभ के बारे में ज्यादा चिंतित रहते हैं।
- सदस्यों की बैठको में उपस्थिति के लिए लगातार प्रयास करने पड रहे हैं चूंकि लोगों ने कभी इस तरह के प्रयासों की कल्पना भी नहीं की है जहॉ सिर्फ गॉव के लोग ही सब कार्य करते हैं अतः सदस्यों को लगता है हमारे प्रयास करने से क्या होगा। सामूदायिक एकता और सभी को लाभ की भावना के विकास होने में समय लगेगा।
- सरकारी नीतियॉ और कार्यक्रम जहॉ प्रभावी भूमिका निभाते हैं वहीं कहीं निश्प्रभावी भी साबित होते हैं चूंकि सरकार काफी योजनाओं के माध्यम से पैसा व्यय करती है लोगों की धारणा बनते जा रही है कि हर काम सरकार करेगी। स्वयं और गॉव की हर समस्याओं के हल के लिए सरकार और पंचायतों की ओर देखने लोगों की आदत में भाामिल होता जा रहा है।
- सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारी भी इन समितियों को सहयोग नहीं देते विकासखंड स्तरीय चिकित्सा अधिकारियों का नजरिया इन समितियों के प्रति नकारात्मक ही है उनकी ओर से कभी प्रोत्साहन नहीं दिया जाता।

सूचना मेला

सूचनाएं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं गॉव में विकास के धीमी गति के पीछे सूचनाओं का आभाव स्पश्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रभावी और सक्षम लोगों भाासकीय अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा सूचनाओं को छिपाना और गलत जानकारी प्रदान कर विकास को बाधित कर अपने हित साधना रहा है। लगभग सभी विशयों पर सूचनाएं सरल तरीके से लोगों तक पंहुचे इस उद्दे”य को ध्यान में रखकर परियोजना क्षेत्र के ग्राम पंचायत बहियाटीकुर, चीचगॉव, साल्हे, टेकाडी, रानीकुठार और धारावासी और इनके टोलों में जानकारियों एवं योजनाओं के प्रचार प्रसार के लिए चौपाल परियोजना के द्वारा सूचना मेलों का आयोजन किया गया । इन सूचना मेलों में समुदाय के लिए प्रत्यक्ष रूप से जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई, तथा योजनाओं के पाम्पलेट, पोस्टरों का वितरण किया गया, स्वच्छता, जल जनित एवं मल जनित बीमारियों के कारणों पर समुदाय की समझ बनाने हेतु नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया ।

सूचना मेलों का आयोजन ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों सरपंच/सचिव/सृजन समुह/ ग्राम स्वास्थ्य समिति के समन्वय के साथ किया गया कार्यक्रम के स्थान, दिनांक एवं समय के सभी गांवों में प्रचार प्रसार के लिए मुनादी करवाई गई । तथा स्व–सहायता समूह, सृजन समूह वार्ड पंचों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क कर जानकारी दी गई एवं सूचना मेला में समुदाय की उपस्थिति के लिए सहयोग करने की अपेक्षा की गई ।

क.	ग्राम पंचायत	दिनांक	उपस्थिति		
			महिला	पुरूष	बच्चे
1	चिंचगॉव	18.10.08	40	45	60
2	साल्हे	24.10.08	60	30	40
3	टेकाडी	20.10.08	75	40	35
4	रानीकुठार	23.10.08	35	20	25
5	धारावासी,	17.10.08	30	80	50
6	बहियाटीकुर	21.10.08	36	40	45
	कुल		276	255	255

निर्धारित दिनांक को समय 10.00 बजे पंचायत भवन में संस्था कार्यकताओं के द्वारा सूचना स्टाल लगाया गया। पंचायत भवन में, ग्रामवासियों के उपस्थित होने पर उन्हें सूचना मेला आयोजन का उद्वेश्य बताया गया कि संस्था ने सूचनामेला का आयोजन गांव के समुदाय में योजनाओं एवं सूचनाओं की जानकारियॉ बढे एवं लोगों को योजनाओं एवं सूचनाएं आसानी से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहूंच जाएं। समुदाय में योजना एवं जानकारियों का स्तर बढ़ेगा तो शासकीय योजनाओं में पारदर्शिता आयेगी ।

सूचना मेले में गांव के लगभग 750 लोगों ने भाग लिया, लोगों ने सूचना मेला स्टाल में पॅहुच कर अपना पंजीयन कराया, एवं विभिन्न योजनाओं के पांपलेट, पोस्टर्स प्राप्त किये ।

परामर्श स्टाल में, लोगों को योजनाओं की जानकारियों पर बताया गया जैसे, रोजगार ग्यारंटी योजना में बताया गया कि यह योजना गांव के प्रत्येक परिवार को 1 वर्ष में 100 दिन का काम देने की घोषणा करता है, यदि आप योजना का लाभ लेने के लिए अपने गांव के ग्राम पंचायत में अपने परिवार का पंजीयन करवा कर कार्ड बनाना होगा। जिसे जॉब कार्ड कहते है। जॉब कार्ड प्राप्त होने के पश्चात आप अपनी पंचायत कार्यालय में काम के लिए लिखित आवेदन करना होगा एवं आवेदन की रसीद प्प्राप्त करना होगा। ग्राम पंचायत आपको 15 दिन के अंदर एक साथ 14 दिन का काम उपलब्ध करवा देगी यह तय है, यदि आपको काम नहीं मिलता है तो और 1 दिन की मजदूरी का एक तिहाई भाग के बराबर बेरोजगारी भत्ता दिया जायेगा। और यदि आपको 5 कि.मी. के दायरे से दूर काम दिया जाता है तो आने जाने का भत्ता दिया जायेगा। और आपने अपने द्वारा किये गये कार्य दिवस को अपने जॉब कार्ड में अंकित अवश्य करवाये, अपने या परिवार के द्वारा किये कार्य दिवस एवं जॉब कार्ड में अंकित कार्य दिवस का मिलान अवश्य करें। अंतर होने पर दर्ज करने वाले व्यक्ति से मिले एवं निराकरण का प्रयास करे। इस योजना में मजदूरी का भुगतान अधिकतम 15 दिन के अंदर हो जाना चाहिये एवं भुगतान अधिकतम 15 दिन के अंदर हो जाना चाहिये एवं भुगतान महिला एवं पुरूषो को सम़ान रूप से दिया जाता हैं । जो कि शासन द्वारा निर्धारित होता है जैसा कि वर्तमान समय में 85.00 रू0 प्रति दिन है, उसी दर से मजदूरी का भूगतान प्राप्त करे।

इस तरह विभिन्न महत्वपूर्ण विशयों पर जानकारियॉ दी गयी सूचना मेले में मुख्यतः रोजगार ग्यारंटी, कृशि संबंधी योजनाओं, महिला और बाल विकास की योजनाओं, स्वास्थ्य विभाग की योजनाओं तथा जिला पंचायत द्वारा संचालित योजनाओं पर जानकारी प्रदान की गयी । इन मेलों में स्थानीय विभागीय कर्मचारियों ने भी भाग लिया और अपने विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में बताया गया। जिला स्तर से भी अधिकारियों ने इन सूचना मेलों में भाग लिया।

पोषण और स्वास्थ्य दिवस

महिला एवं बाल विकास विभाग ने प्रत्येक गॉव में आगनबाडी केन्द्रों की स्थापना गॉव में टीकाकरण स्वास्थ्य जॉच, पोषण आहार वितरण संदर्भ सेवाऍ अनौपचारिक शिक्षा सेवाऍ प्रत्येक व्यक्ति तक पॅहुचे कुपोषण, बाल मृत्यु और मातृमृत्यु में कमी लाने के उद्देश्य में किया गया है, उपरोक्त सेवाएं प्रत्येक गांव की आंगनवाड़ी केन्द्र पर उपलब्ध हैं किन्तु रानीकुठार पंचायत के ग्राम बीजाटोला, गनखेड़ा, रानीटोला, धारावासी पंचायत में मलगोदी जंगल के किनारे होने से इन सेवाओं की पहुच में लगातार कमी रही हैं ऑगनबाडी कार्यकर्ता का इन गॉवो में गृहसम्पर्क हितग्राही तक बिल्कुल कम है वह केवल अभियानों या कुछ अवसरो के दौरान ही हितग्राही तक पहॅुच पाती हैं। परियोजना के हस्तक्षेप से आंगनवाडी केंद्रों की सेवाएं अपॅहुच क्षेत्रों में भी सुनि"चत हुई हैं।

आंगनवाडी केंद्रों की सार्थकता तभी होगी जब सेवाएं पूरी गुणवत्ता के साथ प्राप्त हो इस पर संस्था ने व्यापक रूप हस्तक्षेप आंगनवाडी केंद्रों, ग्राम पंचायतों और ग्राम स्वास्थ्य समितियों के साथ किया जिसके बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं। विभिन्न स्तरों पर संम्पन्न बैठकों में परियोजना क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को रखा गया जैसे :

चर्चा के मुद्दे जो भिन्न फोरम में रखे गये :

- पोषण स्वास्थ्य दिवस के दौरान देखा गया कि गर्भवती माताओं के पेट की जॉच नही होती थी ए.एन.एम. से चर्चा की गई व गर्भवती माताओं को समझाया गया कि वे गर्भावस्था में कम से कम तीन जॉच अवश्य करावे ।
- ग्राम चीचगॉव में एक गर्भवती महिला श्रीमती शारदा जाति गोंड़ जिसे आठवॉ माह प्रारंभ हैं टी.टी. का प्रथम टीका लगा है पेट की जॉच एक भी नहीं की गई 1 बार वजन हुआ है, उस महिला को समझाईश दी गई कि वे ऑगनबाड़ी केन्द्र में जाये वहॉ से सेवायें ले वजन करवाये, पोषण स्वास्थ्य दिवस में जाकर पेट की जॉच करवाये ।
- ग्राम साल्हे में पोषण स्वास्थ्य दिवस के दौरान देखा गया कि एक धात्री महिला रूखमणी जिसकी बच्ची निकिता 2.5 माह की है, रूकमणी अपनी बच्ची को लेकर पोषण दिवस में टीका लगवाने नहीं आई थी खेती के कार्य करने के लिए (रोपा लगाने) गई थी 2.5 माह की बच्ची को सिर्फ 2 बार मॉ का दूध पिलाया जाता था बाकि समय गाय का दूध पिलाया जाता था उस महिला को खेत से बुलाकर समझाया गया कि वह खुद अपनी बच्ची को लेकर केन्द्र में आये व टीका लगवाये बच्ची को मॉ का ही दूध पिलाये ।
- जो हितग्राही ऑगनबाड़ी केन्द्र में सेवायें लेने जैसे गर्भवती महिला रोज पोषण लेने नहीं आ रही तो उन्हें समझाइश दी गई कि वे ऑगनबाडी केन्द्र में आकर सेवायें लें ।

- ऑगनबाडी कार्यकर्ता व आशा कार्यकर्ता से चर्चा की गई कि वे गृहभेंट के दौरान गर्भवती महिला व धात्री महिला को समझाये कि वे ऑगनबाड़ी केन्द्र में सेवायें लेने आये ।
- ऑगनबाड़ी कार्यकर्ता से चर्चा की गई कि वे माह के हर मंगलवार को नवाचार कार्यक्रम करवाये जिससे सामूदायिक सहभागिता बढ़ेगी।

आंगनवाडी केन्द्र से गर्भवती तथा धात्री महिलाओं तथा 3 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए पूरक पोषण आहार एवं सूखा राशन वितरण किया जाता हैं किन्तु आंगनबाड़ी केन्द्र पर वितरण एवं सेवन संबंधी जानकारी हितग्राही को पर्याप्त नहीं होने से इस पर कम सुधार हो रहा है अतः इस स्थिति में सुधार लाने से संस्था कार्यकर्ता निरन्तर सहयोग दे रहे हैं और आंगनबाडी केन्द्रों तक इन गॉवों के हितग्राहियों को जोडने तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का इन गॉवों तक सम्पर्क करने में अपना सहयोग दे रहे हैं। परियोजना क्षेत्र के सभी गॉवो में स्वास्थ्य विभाग एवं महिला बाल विकास विभाग के सहयोग से प्रति माह प्रत्येक गॉव में पोषण एवं स्वास्थ्य दिवस का आयोजन किया जाता हैं प्रत्येक गॉव के लिए एक दिन निश्चित किया गया हैं इस दिन गॉव के आंगनबाडी केन्द्र पर गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों का टीकाकरण एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता हैं और यह प्रतिमाह एक बार होता है किन्तु इस दिन गॉव के सभी हितग्राहियों तक यह सेवाएँ नही पहुॅच पाती जो दूर दराज के टोलों या घरों में रहते हैं ।
अतः संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा पन्डरपानी, धारावासी, मौसमी, भानूटोला बहियाटीकुर मरेरा चिचगॉव साल्हे टेकाड़ी के पोषण एवं स्वास्थ्य दिवस पर उपस्थित होकर स्वास्थ्य सेवा प्रदाता ऑगनबाडी कार्यकर्ता स्वास्थ्य कार्यकर्ता का सहयोग किया गया। इस दिन हितग्राही से सीधे सम्पर्क होता है एवं प्रत्यक्ष लाभ से वंचित हितग्राही की जानकारी कार्यकर्ता से प्राप्त कर हितग्राही से सम्पर्क किया गया ।

जैसे ग्राम पंडरपानी में हरदास पत्नि कला बाई का लडका जिसकी उम्र 6 माह की हो गई थी उसे आज तक किसी भी प्रकार की कोई स्वास्थ्य सेवा व टीकाकरण नहीं किया गया था अतः जानकारी मिलने पर कार्यकर्ता द्वारा हितग्राही से सम्पर्क किया गया एवं परिवार के सभी लोगों से बात कर बताया गया कि बच्चे को टीका लगाना बहुत महत्वपूर्ण है यदि नहीं लगाया तो बच्चे को छः जानलेवा बीमारियॉ होने की संभागवना हैं, यदि बच्चे को समय पर सभी टीके लगने से बच्चे को इन बिमारियॉ होने की संभावना नही रहेंगी अतः अभी भी वक्त हैं अपने बच्चे को टीका लगाने का, आप अपने बच्चे को केन्द्र पर ले जाकर टीका लगवा ले इस पर परिवार के लोगों की समझ बनी एवं बच्चे की मॉ कला बाई ने अपने बच्चे राजा को

ग्राम पंडरपानी से एक और हितग्राही महिला सरिताबाई पति सावनलाल 9 माह की गर्भवती महिला है इस महिला का स्वास्थ्य परीक्षण द्वितीय एवं तृतीय तिमाही में होना था किन्तु सरिता बाई ने केन्द्र पर आकर एक भी बार अपना स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराया इस महिला से सम्पर्क किया गया एवं बताया गया कि स्वास्थ्य परीक्षण करने से प्रसव के समय व प्रसव के पहले होने वाले जोखिम के संबंध में जानकारी हो जाती है और हम उस जोखिम से बचने का प्रयास समय पर कर सकते हैं इस पर महिला एवं परिवार पर अच्छी समझ बनी एवं सरीता बाई ने केन्द्र पर आकर अपना स्वास्थ्य परीक्षण करवाया ।

ग्राम बहियाटिकुर में सकुनबाई पति रमेश की पारिवारिक स्थिति कमजोर होने से वे दोनों दिन रात अपने कार्यो में व्यस्त रहते थे और पत्नि गर्भवती थी और उसे टिटनेस का टीका नहीं लगा था जबकि उसे गर्भधारण किये हुए 5 माह बीत चुके थे और ना ही स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा उन तक पहुचने की कोशिश की गई । जब संस्था कार्यकर्ता को इस बात का पता चला कि सकुनबाई ने टीका नहीं लगाया तो उसने सकुनबाई के द्वार ग्रहभेट किया एवं टी.टी का टीका लगने सलाह दी साथ ही अन्य सेवाओं के बारे में भी बताया जैसे ऑगनबाडी केन्द्र से पूरकपोषण आहार एवं अन्य संदर्भ सेवाएँ जैसे वजन ऊँचाई जिसका गर्भावस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है जैसे प्रतिमाह वजन करने से वजन में होने वाले अन्तर से गर्भस्थ शिशु की बढत एवं स्वास्थ्य का पता लगाया जा सकता है उसी प्रकार ऊँचाई का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं जैसे गर्भवती माता की ऊँचाई यदि 4.10 इंच से कम हो तो प्रसव के समय जोखिम हो सकता हैं इस तरह का परामर्श देते हुये समझ बनाई गई एवं सकुनबाई एवं उसके परिवार को तैयार किया गया परिणाम स्वरूप सकुनबाई ने केन्द्र पर पहुचकर टीका लगाया ।

इसी भांति पोषण एवं स्वास्थ्य दिवस पर धारावासी में सहयोग हेतु जाने पर पता चला कि हितग्राही लीलाबाई पति बसंत अपने बच्चों को आंगनबाडी नहीं ले कर आती जिससे बच्चे को टीका एवं अन्य सेवाएँ जैसे वजन नहीं लिया जा रहा है जिससे उसके शारीरिक विकास का पता नहीं चल रहा है अतः उसे भी घर पर जाकर समझाया कि बच्चे के शरीरिक विकास की स्थिति का पता लगाने हेतु प्रतिमाह वजन कराना आवश्यक होता है एवं केन्द्र पर बच्चे की उम्र के अनुसार जानकारियॉ दी जाती है यदि आप समय निकालकर आधे घन्टे के लिए माह में 2 बार ऑगनबाडी जाते हैं तो आपके बच्चे के स्वास्थ्य के लिए बहुत सारी जानकारी मिल जायेगी । जिससे आप अपने बच्चे के स्वास्थ्य का ध्यान रख सकेंगे परिवार के लोगों की समझ बनने से बच्चे को नियमित केन्द्र लाया जाता है एवं सेवाएँ ली जाती हैं ।

इस तरह के अनेक प्रकरणों को पहचान कर उन पर कार्य किया गया साथ ही इन सभी मुद्‌दों को ग्रामसभा और सरपंच के साथ बांटा गया जिससे परिवर्तन यह हो रहा है कि वार्ड पंच और संरपंच भी गॉव की आंगनवाडी का भ्रमण करते हैं और आव”यक हिदायतें कार्यकर्त्ताओं को देते हैं समुदाय में लोगों को भी पंचायत प्रतिनिधियों के माध्यम से जानकारी देने का प्रयास किया जा रहा है।

क्र	पोषण स्वा. दिवस पंचायत का नाम	हितग्राही	परामर्श के बिन्दु
1	बहियाटीकुर	महिलाएं	बरसात के मौसम में बच्चों की देखभाल व्यक्तिगत स्वच्छता
2	धारावासी	महिलाएं	पूरक पोषण/आहार का सेवन (बच्चों एवं गर्भवती महिला) अतिरिक्त आहर के रूप में उपयोग करें ।
3	बहियाटीकुर	महिलाएं	कुपोषण से बचने हेतु प्रयास
4	साल्हे	महिलाएं	गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी चर्चा
5	चिंचगॉव	महिलाएं	जो हितग्राही आगनबाड़ी केन्द्र में नही आते थे उन्हें केन्द्र में आने के लिए प्रेरित किया गया। में नही आते थे उन्हें केन्द्र में आने के लिए प्रेरित किया गया। आते थे उन्हें केन्द्र में आने के लिए प्रेरित किया गया। में नही आते थे उन्हें केन्द्र में आने के लिए प्रेरित किया गया।
6	टेकाड़ी	महिलाएं	

स्वास्थ्य जागरूकता शिविर

स्वास्थ्य जागरूकता शिविर के आयोजन का उद्वेश्य ग्रामीण लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता एवं ऐसे व्यवहार या समस्या जिनका संबंध सीधे स्वास्थ्य से हो उस पर समुदाय की समझ बनाई जा सके उन समस्याओं के निराकरण हेतु सामुहिक पहल की जा सके इसके साथ ही साथ गॉव में प्राथमिक स्वास्थ्य जॉच की व्यवस्था तथा गॉव के डिपो होल्डर से समुदाय का जुडाव अच्छा हो सके।

इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु ग्राम स्वास्थ्य समिति सृजन समुह सदस्यों तथा स्व–सहायता समुह पंचायत प्रतिनिधियों ने अपना सहयोग दिया। इस आयोजन में संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया प्रदर्शनी में विभिन्न स्वास्थ्य से संबंधित जानकारियों के पोस्टर्स लगाये गये तथा योजनाओं तथा जानकारियों के पाम्पलेट पुस्तको को शामिल कर जानकारियां दी

गई इससे साथ साथ लोगों से चर्चा करते हुए अच्छे स्वास्थ्य एवं शौचालय निर्माण की प्रक्रिया घर में पीने के साफ पानी का रख रखाव एवं प्रबंधन पर जानकारियॉ बताई गई।

गॉव में सभी की जानकारी के लिए मुनादी कराई गई जिसे समुदाय में सभी लोगो तक इसकी जानकारी हो सके तथा लोगों को इस बात की जानकारी हो सके कि वे अपना उपचार व जानकारियों के लिए शिविर में आ सके गॉव के लोगों को स्वास्थ्य शिविर में आने हेतु सृजन समुह सदस्यों ने भी अपना सहयोग दिया ।

स्वास्थ्य जॉच शिविर में उपस्थित लोगों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में आये डॉक्टर टी. सी. मेश्राम बी.एम.ओ. लालबर्रा से कराया एवं जॉच के बाद दवाईयॉ प्राप्त की। स्वास्थ्य परीक्षण के पश्चात् जिन लोगों को लम्बे उपचार की आवश्यकता थी उन्हे सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लालबर्रा आने की सलाह दी गई शिविर में आये अधिकाशं लोग चर्मरोग एवं मौसमी बुखार से पीडित थे उनको उपचार कर दवाईयॉ दी गई आवश्यकता हिदायते व जानकारियॉ दी गई ।

स्वास्थ्य शिविर में उपस्थित लोगों को यह भी जानकारी दी गई कि आपके गॉव में डिपो होल्डर के पास प्राथमिक उपचार की दवाईयॉ उपलब्ध है यदि आपको इसकी आवश्यकता पढे तो गॉव के डिपो होल्डर से प्राप्त कर सकते है और लोगों से यह भी अपेक्षा की गई कि गॉव में स्वास्थ्य से जुडी यदि कोई समस्या है तो गॉव के स्वास्थ्य समिति से बातचीत कर समस्या का निराकरण करवाने में सहयोग करें ।

उपस्थिति विवरण

क्र	दिनांक	स्थान	शिविर में उपस्थित		योग
			महिला	पुरूष	
1	25.11.08	टेकाडी	55	65	120
2	27.11.08	बहियाटीकुर	70	60	130
3	28.11.08	रानिकुढार	85	70	155
4	03.12.08	चिंचगॉव	48	65	113
5	05.12.08.	साल्हे	50	75	125
6	07.12.08	धारावासी	80	65	145

प्रभाव :

स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य शिविर के आयोजन से समुदाय के गरीब व कमजोर वर्ग के लोग जो अपनी व्यस्तता या आर्थिक कमजोरी के कारण अपना ईलाज नहीं करवा सकते थे उन्हें आसानी से शिविर से जोडकर स्वास्थ्य लाभ मिला खासकर उन लोगों को जो चर्म रोग जैसे फोडे– फुन्सी व खुजली से पीडित थे । इसके साथ ही साथ शिविर में प्रदर्शनी के माध्यम से जो जानकारियॉ दी गई उसका प्रभाव अच्छा पड़ा जिससे लोगो की समझ अच्छी बनी, और लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने का प्रयास कर रहे हैं यह बात कार्यकर्ताओं को ग्रह सम्पर्क के समय बातचीत करने पर निकल कर आई जैसे घर में पीने के पानी का प्रबंधन किस तरह करना चाहिए खुले में शौच करना तथा पेय जल स्त्रोतों के आस–पास अस्वच्छता के दुश्परिणाम से भली भांती परिचित हो गये ।

चुनौतियॉं :

स्वास्थ्य शिविर पंचायत स्तर पर आयोजित किया गया था जिससे आश्रित गांवो एवं टोलो की दूरी अधिक होने से एवं लोगों के स्थानीय कार्यो में व्यस्त होने से लोगो का जुडव अपेक्षा कृत कम रहा शिविर में अधिकांश वे ही लोग आये जिन्हे कोई स्वास्थ्य समस्या थी और उन्हें जॉच कराना था अन्य दूसरे लोग जिन्हे केवल जानकारियॉं चाहिए वे नहीं आये ।

ग्रहभेंट

परियोजना स्टॉफ के द्वारा की जाने वाली गृहभेंट परिस्थितियों में परिवर्तन, लोगों में प्रेरणा और जानकारियों के आदान प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । तय यह किया गया है गृहभेंट प्रभावी और जानकारी युक्त हो जिससे समुदाय के साथ जीवंत रि”ते बन सकें जो आगे चल कर परिवर्तन की वाहक बन सके। इस वर्श तय”ुदा कार्यक्रमों के आधार पर गृहभेंट को विभिन्न मुद्दों आधारित बनाया गया और मुद्दों को लेकर गृहभेंट की गयीं। त्रैमासिक आधार पर तय मुद्दें निम्नानुसार थे जिस पर पूर्ण तैयारियों के साथ सभी परियोजना स्टॉफ द्वारा गृहभेंट की गयी।

क्र.	तिमाही	विशय
1	दिसंबर 2007 से फरवरी	स्वच्छता : व्यक्तिगत, पारिवारिक और गॉंव एन.आर.ई.जी.ए.
2	मार्च 2008 से मई 2008	निर्मल ग्राम और भौचालय, ग्राम स्वास्थ्य समितियॉं,
3	जून 2008 से अगस्त 2008	स्वच्छ पेयजल, ग्रामभा, सूचना का अधिकार, सामूदायिक संगठन और स्वयं सहायता समूह
4	सितंबर 2008 से नवंबर 2008	कुपोषण, भासकीय विकासीय योजनाएं, पंचायत राज व्यवस्था

इस तरह परियोजना स्टॉफ ने पूरी तैयारियों के साथ गृहभेंट की और एक एक परिवार में काफी समय दिया और परिवार के सभी सदस्यों से बातचीत की जिसका लाभ यह हुआ हमारी बातें लोगों तक अच्छे से पंहुची और जिसके प्रभाव समुदाय में दिखायी देते हैं

प्रभाव :

संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा ग्रहभेंट के दौरान जो जानकारियॉं दी जाती हैं लोगों पर जानकारियों का प्रभाव पडने लगा है लोग अपने स्वास्थ के प्रति जागरूक होने लगे हैं कुछ लोगों

के शौचालय बन चुके हैं लोग अपने आसपास का वातावरण स्वच्छ रखने लगे हैं साफ सफाई दिखाई देने लगी है ।

- रानीकुठार धारावासी मौसमी चिचगांव पंचायतों में नलकूपों के पास सोख पिट बन चुके हैं लोगों ने तालाब व नलों मे जानवरों को नहलाना भी बंद कर दिया है।
- इन प्रयासों के कारण चिचगांव निर्मल ग्राम घोषित हो चुका है समुदाय के लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं।
- हक व अधिकारों की बात अगर हम करें तो लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहे अपने अधिकारों को समझने लगे है राष्ट्रीय ग्रामीण योजना एक कानून है जिसमें प्रत्येक परिवार को साल में सौ दिन का काम मिलता है और यह मांग आधारित काम है मांगने पर काम मिलगा इसकी जानकारी लोगों को हो गयी है लोगों ने आवेदन लगाना शुरू कर दिया है हमारी कुछ पंचायतें जैसे टेकाडी, साल्हे में लोगों ने काम के लिए आवेदन लगाना प्रारंभ किया है जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त हो सका है जो उनकी आर्थिक स्थिति में बदलाव लाने में मददगार साबित हुआ है।

नुक्कड नाटक प्रदर्शन

चौपाल परियोजना के अंर्तगत आने वाले 18 गांवो में नुक्कड नाटक का आयोजन किया गया **जिसका उददेश्य** समुदाय में व्यक्तिगत और पारिवारिक स्वच्छता तथा सामुदायिक स्वास्थ्य के प्रति सजगता एवं संवेदनशीलता को बढावा और स्वास्थ्य व्यवहारों में बदलाव था । स्वच्छ वातावरण शौचालय निमार्ण जल जनित मल जनित रोग पेयजल स्त्रोतों के आसपास स्वच्छता पीने के पानी दूषित कैसे होता है पीने को पानी साफ करने के तरीको को सहज एंव रोचक तरीके से समझ बनाने मे नुक्कड नाटक का प्रदर्शन किया गया ।

पूर्व तैयारियां

सर्वप्रथम कार्यकर्ता द्वारा नुक्कड नाटक प्रदर्शन की कार्ययोजना बनाई गई एंव इसकी सूचना जनपद पंचायत **लालबर्रा सी. ई. ओ. महिला बाल विकास परियोजना अधिकारी** तथा सरपंचो को जानकारी दी गई जिससे पंचायत के द्वारा नुक्कड नाटक के दिन पूर्व गांव में मुनादी करवा दी गई एंव कार्यकर्ताओ द्वारा स्व सहायता समूह युवा समूह ग्राम स्वास्थ्य समिति वार्ड पंच से सम्पर्क कर नुक्कड नाटक का उददेश्य बताया गया एवं नाटक देखने में लोगो की उपस्थिति बढाने हेतु अधिक से अधिक लोगों तक कार्यक्रम की जानकारी देने की बात कही ।

नाटक के माध्यम से दिये जाने वाले संदेश :

- ✓ गांव का वातावरण अस्वच्छ हाने के कारण

- ✓ मल जनित होग क्या है मल के रोगाणु बीमारियां कैसे फैलाते हैं
- ✓ शौचालय निर्माण की प्रकिया
- ✓ शौचालय निर्माण के फायदे
- ✓ पीने का पानी दूषित कैसे होता है
- ✓ घर में पीने का पानी कैसे उपचारित करे
- ✓ स्वच्छता क्या है हमारा योगदान क्या हो सकता है
- ✓ व्यक्तिगत स्वच्छता क्या है

नुक्कड नाटक की स्क्रिप्ट का विकास परियोजना स्टॉफ और नुक्कड टीम के सदस्यों ने मिलकर बनायी जिसमें संदे"ाों की स्पश्टता पर वि"ोश ध्यान दिया गया। संदे"ा स्थानीय बोलचाल में दिये गये साथ ही प्रस्तुतीकरण को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए गीत और स्थानीय लोकगीतों का प्रयोग किया गया। लगभग तीन द्यंटे के कार्यक्रम ने समुदाय को काफी प्रभावित किया। लगभग सभी कार्यक्रम स्थानीय समय को ध्यान में रखकर किया गया। नुक्कड नाटक में बताये गये संदेशो के संबंध मे महिला व पुरूषो से साक्षात्कार लिया गया जिसमे निम्न बाते निकल कर आई।

- इस तरह की जानकारिया हमें पंचायतों के माध्यम से कभी नहीं दी गई
- जल से होने वाले क्या क्या रोग है इस पर जानकारी नहीं थी
- मल से बिमारियां होती है इसके फैलाव के माध्यम के बारे में जानकारी नहीं थी
- शौचालय निर्माण की प्रक्रिया भी पता नहीं थी
- घर मे पीने का पानी उपचारित कैसे करते है मालूम हुआ

प्रभाव :

नुक्कड नाटक करने के बाद देखा गया कि सभी गॉवों में लोगों ने शौचालय बनाने का निणय लिया है। ग्राम खैरगोंदी में सभी बी.पी.एल परिवारो ने शौचालय बनवाने के लिए पंचायत में आवेदन दिया हुआ है।

नुक्कड नाटक प्रदर्शन

कमांक	ग्राम पंचायत	ग्राम	दिनॉक	महिला	पुरूष	बच्चे	सरपंच	पंच
1	टेकाडी	कंटगटोला	20.05.08	25	30	30	01	02
2	धारावासी	मौसमी	21.05.08	50	70	30	01	04
3	साल्हे	खैरगोंदी	22.05.08	25	30	15	00	02
4	रानीकुठार	गनखेडा	23.05.08.	15	20	15	00	01
5	रानीकुठार	देवगांव	24.05.08.	50	80	40	00	03
6	टेकाडी	नवेगांव	26.05.08.0	15	28	20	00	01
7	धारावासी	मानूटोला	27.05.08.	40	60	50	01	02
8	बहियाटीकुर	सिरसाटोला	28.05.08.	25	30	15	01	02
9	बहियाटीकुर	मरेरा	29.05.08.	10	60	30	01	04
10	टेकाडी	चिखलाबर्डी	30.05.08.	25	40	30	00	02
11	टेकाडी	टेकाडी	21.10.08.	75	40	35	01	04
12	बहियाटीकुर	बहियाटीकुर	21.10.08	30	55	40	01	05
13	रानीकुठार	गणेशटोला	23.10.08	35	20	25	00	00
14	साल्हे	साल्हे	24.10.08.	25	30	55	01	03
15	रानीकुठार	बीजाटोला	10.10.08	32	20	28	00	03
16	रानीकुठार	रानीकुठार	16.10.08	150	100	50	01	03
17	धारावासी	धारावासी	17.10.08	30	80	50	01	05
18	चिंचगॉव	चिंचगॉव	18.10.08	40	45	60	01	05
TOTAL				697	838	618	11	51

अभियान

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005

समुदाय में सरकारी योजनाओं एवं जानकारियों के लिए आम व्यक्ति भी सूचना के अधिकार का उपयोग कर प्र”ाासकीय कार्यों में पारदर्शिता ला सकता है, अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है। सूचना के अधिकार को व्यापक उपयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्दे”य से सूचना के अधिकार पर जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

क्या है सूचना का अधिकार अधिनियम

बताया गया कि सूचना का अधिकार संपूर्ण देश में 12 अक्टूबर 2005 से लागू किया गया, इस कानून के तहत कोई भी नागरिक किसी भी सरकारी विभाग, निकाय से जानकारी मांग सकता है। इस अधिकार के द्वारा हम न समस्त विभागों निकायों, प्राधिकरणों से जो संविधान के द्वारा बनाये गये है। ससंद या विधान सभा के कानून के द्वारा बनाये गये हैं केंद्र या राज्य सरकार की अधिसूचना के द्वारा बनाये गये है। केंद्र या राज्य सरकार के स्वामित्व की या उनके द्वारा नियंत्रित या उनके द्वारा धन प्राप्त करते हैं ऐसे समस्त संस्थानों से जानकारियां ले सकते है।

❖ **जानकारी लेने का स्वरूप** :— किसी भी कार्यालय से दस्तावेज, अभिलेख का निरीक्षण कर सकते है। दस्तावेजों या अभिलेखों की प्रमाणित फोटोकापी ले सकते है। जहां पर इलेक्ट्रानिक या मीडिया द्वारा जानकारिया का संग्रहण होता है वहां से उसको सी डी फलापी, टेप विडियों कैसेट में भंडारण हो तो उसकी कापी ले सकते है।

❖ **जानकारी प्राप्त करने के लिए क्या करना होगा** :— आप जिस कार्यालय से जानकारी लेना चाहते हैं उसमें नियुक्त किये गये लोक सूचना अधिकारी सहायक लोक सूचना अधिकारी को आवेदन दे सकते हैं अपने आवेदन में चाही गई जानकारी/ अभिलेख /रिकार्ड का स्पष्ट उल्लेख उवश्य करें।

❖ **आवेदन करने का तरीका** — किसी भी कार्यालय या सरकारी दफतर से जानकारी प्राप्त करने के लिए लिखित आवेदन करना होगा, आवेदन स्वयं डॉक या इलेक्ट्रानिक माध्यम द्वारा आवेदन दिया जा सकता हैं सूचना लेने के लिए दस रू. के नान ज्यूडिशियत स्टाम्प या दस रू. नगद जमा करना होगा। जिनका नाम बीपी एल रेखा में हैं उन्हें कोई शुल्क नहीं देना होगा। आवेदक जानकारी क्यों मांग रहा है। यह बताना जरूरी नहीं है । आवेदन की जानकारियॉ भिजवाने हेतु स्थाई पता देना जरूरी है। लेकिन अन्य कोई जानकारी देना जरूरी नहीं होगा।

निम्न विशयों पर भी समुदाय में जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली योजना** :— इस योजना के अंर्तगत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों को न्यूनतम मूल्य पर एक माह में 35 कि0ग्राम राशन देने का प्रावधान हैं जैसा कि वर्तमान समय में 5 रू0 कि0 गेंहूँ एवं 6.50 रू. प्रति कि0ग्राम चावल देने का प्रावधान हैं और हितग्राही माह के कुल राशन की मात्रा को किस्तों में प्राप्त कर सकता है राशन की दुकान निर्धारित समय में पूरे माह खुली रहेगी। ।
- **अन्तयोदय अन्न योजना** :— गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले अति गरीब परिवारों को बहुत ही कम मूल्य पर 35 कि राशन प्रतिमाह देने का प्रावधान हैं वर्तमान समय में 2 रूपये किलो गेहूँ एवं 3 रू. ग्राम चॉवल माह में किस्त के रूप में लेने का प्रावधान है इस योजना के लिए पात्र हितग्राहियों का चयन ग्राम सभा द्वारा किया जाता है सर्वोच्च न्यायालय के आदेश 2 मई 2003 के अनुसार इस योजना में निम्न लोगों को भी शामिल किया गया है चाहे वे गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हो या नहीं । जैसे — बूढे, लाचार, विकलांग, बेसहारा पुरूष एवं महिलाऍं, गर्भवती महिला और बच्चों को दूध पिलाने वाली माताऍं विधवा एवं वे एकल महिलाऍं जिनका कोई सहारा न हो । राशन की दूकान की सभी शर्ते इस लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली पर लागू होती हैं वह इस योजना पर भी लागू होती है ।
- **राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन** :—यह योजना मानवीय संवेदनाओं के नजरिये से यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यक्रम हैं क्योंकि देश में सामाजिक एवं खाद्य सुरक्षा से प्रभावित वृद्ध लोगों को भुखमारी से बचाने के प्रयास हेतु किया गया है। इस योजना में सितम्बर 2007 में संशोधन कर नया रूप दिया गया हैं जिसके अनुसार 65 वर्ष की उम्र के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले वृद्ध महिला पुरूष को राष्ट्रीय पेंशन का लाभ दिया जायेगा।

  इस योजना के तहत केन्द्र सरकार प्रतिमाह 200 रू. प्रति हितग्राही के हिसाब से राशि का आंबटन करती है म.प्र. में केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित राशि के अतिरिक्त 75 रू. प्रतिमाह का आबंटन राज्य सरकार द्वारा किया जाता हैं इस प्रकार हितग्राही के पेंशन राशि 275 रू. प्रतिमाह हैं इस योजना में प्रतिमाह 7 तारीख से पहले राशि का भुगतान नियमित रूप से किया जाने का प्रावधान है ।
- **शौचालय निर्माण योजना** :
- **राष्ट्रीय परिवार सहायता योजना** :
- **राष्ट्रीय मातृत्व सहायता योजना** :
- **जननी सुरक्षा योजना**

  विगत वर्ष में उपरोक्त विशयों पर काफी सद्यनता के साथ काम किया गया क्योंकि परियोजना क्षेत्र में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के साथ साथ विभिन्न शासकीय योजनाओं की पॅहुच या उनके लाभ की स्थिति बेहतर नहीं है। समुदाय के छोटे छोटे प्रयासों और मुद्‌दों को सामने लाने पर परिस्थितियों में परिवर्तन दिखायी दे रहे हैं जैसे राशन दुकान का नियमित खुलना और आवश्यकतानुसार राशन प्राप्त हो जाना संभव हुआ है। समुदाय में इन छोटे छोटे प्रयासों से उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

एड्स जागरूकता अभियान

1 दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस के अवसर पर एडस जागरूकता कार्यक्रम कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर बालाघाट के द्वारा विकासखंड लालबर्रा की रानीकुठार ग्राम पंचायत में किया गया। चूंकि बालाद्याट जिले की नाको द्वारा एड्स के प्रसार में ए केटेगरी में रखा गया है अतः परियोजना में भी विचार किया गया कि इस विशय पर भी जागरूकता प्रचार का कार्य कर सकते हैं। संस्था एक अन्य परियोजना में एड्स पर कार्य कर रही है अतः विशय विशेषज्ञ और प्रचार प्रसार सामग्री संस्था के पास उपलब्ध थी जिसका प्रयोग कर एक प्रभावी अभियान संपन्न किया जा सका।

रैली के आयोजन के उद्देश्य :

- समुदाय तक एच.आई.व्ही/एड्स की समझ विकसित हो सके।
- इस विशय के प्रति समुदाय में सकारात्मक सोच विकसित हो।
- विद्यालय के छात्र छात्राओं को इस विशय पर पूरी जानकारी प्राप्त हो।

उपस्थित छात्र छात्राएँ व गतिविधियाँ

विद्यालय का नाम	गतिविधि	उपस्थित छात्र	उपयोग की सामग्री
माध्यमिक विद्यालय रानीकुठार लालबर्रा	एच.आई.व्ही/एड्स पर उन्मुखीकरण और रैली प्रश्नौत्तरी	175	पोस्टर/ पम्पलेट्स

पूर्व तैयारियाँ

संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा विद्यालय में पूर्व सूचना देकर विश्व एड्स दिवस पर इस विशय पर छात्रों के बीच बात रखने की शिक्षकों से अनुमति ली गई। और इसी के साथ ही साथ गॉव में रैली प्रदर्शन की बात की गई। पोस्टर बैनर पम्पलेट्स आदि के उपयोग के लिये एकत्र किया गया।

प्रकिया :

विद्यार्थियों को एक ही जगह पर एकत्र कर कार्यक्रम के आयोजन के उद्देश्य और विश्व एडस दिवस मनाने का कारण बताते हुये बताया गया कि यह दिवस उनके प्रति श्रध्दांजलि है जोकि एड्स जैसी भयावह स्थिति के कारण जिनका देहांत हुआ है। इस पर आगे चर्चा करते हुये एच.आई. व्ही और एड्स में अंतर बताया गया कि एचआईव्ही एक वायरस जोकि शरीर में प्रवेश करने के उपरांत तुरंत सक्रिय नहीं होता बल्कि धीरे धीरे अपना समुदाय विकसित कर अपना स्थायित्व बना लेता है। तीन से चार साल की अवधि तक यह शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र का नश्ट निरंतर करता है। जिससे शरीर की श्वेत रक्त कणिकाएॅ जोकि संक्रमण को रोकने के लिये जिम्मेदार हैं, वे कम होती जाती हैं। एक स्थिति यह आती है कि शरीर में बीमारियों से लड़ने की क्षमता समाप्त हो जाती है और अनेक प्रकार की बीमारियॅा शरीर को घेर लेती हैं। यह स्थिति एड्स कहलाती है। यह स्पष्ट किया गया कि एड्स कोई बिमारी नहीं है बल्कि यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाती है। इसके उपरांत वायरस के प्रवेश करने के माध्यम पर चर्चा करते हुये बताया गया कि

- **एच.आई.वी. संक्रमित सुई या सिरिंज के उपयोग से।**
- **एच.आई.वी. संक्रमित रक्त या उत्पाद चढाने से।**
- **किसी एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन सम्पर्क से।**
- **एच.आई.वी. संक्रमित माता/पिता से उनके होने वाले बच्चे को।**

इन्ही चार कारणो से एच.आई.वी./एड्स फैलता है।

एच.आई. वी./एड्स से बचने के लिए हमेशा इन बातों को ध्यान रखना आवश्यक है ।

- हमेशा संयम एवं सुरक्षित यौन संबंध रखे ।
- एक से अधिक लोगों के लिए उपयोग की जाने वाली सिरिज व सुई को उपयोग से पहले 20 मिनट तक उबाले ।
- रक्त या रक्त उत्पाद जॉच कर ही चढाये ।

आयोडीन युक्त नमक के सर्वत्रीकरण हेतु जागरूकता अभियान

गॉवों में अभी भी लोगों द्वारा खडे नमक का प्रयोग किया जा रहा है साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नमक में आयोडीन की मात्रा कम पायी गयी। चूंकि आयोडीन की कमी से काफी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा होती है। सरकार के व्यापक प्रचार प्रसार के बावजूद आयोडीन युक्त नमक का प्रयोग सुनिश्चित नहीं हो पा रहा है। साथ ही घरों में नमक के रख रखाव पर भी स्पश्टता नहीं है जिससे आयोडीन युक्त नमक खरीदने के बाद भी नमक में आयोडीन की मात्रा निर्धारित मानक से कम हो जाती है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर परियोजना क्षेत्र की सभी पंचायतों के सभी प्राथमिक स्कूलो में तथा ऑगनबाड़ी केन्द्रों पर उपयोग किये जाने वाले नमक में आयोडीन की कितनी मात्रा है, यह परीक्षण स्कूल के शिक्षक तथा खाना पकाने वाले तथा गांव के एक दो व्यक्ति के समक्ष नमक में आयोडिन के पी.पी.एम. के स्तर का परीक्षण कर बताया कि आपके मध्यान भोजन बनाने में इस्तेमाल किये जाने वाले नमक में आयोडिन है या नहीं ? यदि है तो कितने पी.पी.एम. है और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति (जो नमक खरीद कर लाता है) को बताया गया कि आयोडिन की कमी से बच्चो में मुख्य चार बिमारियॉ होने की संभावना होती हैं अतः आप हमेशा आयोडिन नमक का इस्तेमाल करें ।

कमांक	ग्राम पंचायत	ग्राम	दिनॉक	उपस्थिती		
				शिक्षक	छात्र	छात्रा
1	टेकाडी	कंटगटोला	10.11.08	02	15	20
2	टेकाडी	टेकाडी	11.11.08	03	32	22
3	साल्हे	खैरगोंदी	05.11.08	02	15	16
4	साल्हे	साल्हे	06.11.08	03	23	30
5	चीचगॉव	चिंचगॉव	06.11.08	03	18	22
6	रानीकुठार	रानीकुठार	08.11.08	04	28	26
7	धारावासी	धारावासी	09.11.08	03	32	25
8	धारावासी	मौसमी	10.11.08.	02	25	23
9	बहियाटीकुर,	मरेरा	11.11.08	03	30	15
10	बहियाटीकुर,	बहियाटीकुर,	12.12.08	02	21	20
कुल				**27**	**214**	**219**

प्राथमिक शाला धारावासी से मध्यान्ह भोजन बनाने में उपयोग किये जाने वाले नमक में आयोडिन की मात्रा बिल्कुल नहीं थी अतः मध्यान्ह भोजन बनाने वाले तथा स्कूल के शिक्षक तथा पी.टी.ए के अध्यक्ष जैयपाल पंचेश्वर तथा गॉव के पांच अन्य व्यक्तियों के साथ एक आधे धण्टे की बैठक की गई एवं बैठक में सभी सदस्यों को बताया गया कि प्रतिदिन हमें आयोडिन की निर्धारित मात्रा मिलना चाहिए आयोडिन एक प्राकृतिक तत्व है जो सभी के लिए जरूरी है जिसकी पूर्ति साधारण नमक में आयोडिन मिल कर की जाती है और नमक का इस्तेमाल सभी लोग प्रतिदिन करते हैं आयोडिन के नियमित प्रयोग से बच्चो में मंदबुद्धि, गूंगापन, बहरापन, और घेंघा रोग से बचाया जा सकता है और बच्चो में आयोडिन की कमी से कई दुषपरिणाम देखा जा सकते हैं।

जैसे –

बच्चों में मानसिक कमजोरी – कक्षा में खराब प्रदर्शन

बच्चों में सही बढ़त का न होना – बच्चों का शारीरिक सही विकास नहीं हो पाता

बोलने में दोष – गूंगापन

सुनने में दोष बहरा पन – घेंघा जैसे बिमारियों की संभावना होती है

पंचायत एवं ग्राम सभा

परियोजना क्षेत्र की सभी 6 पंचायतो बहियाटीकुर, चिंचगॉव साल्हे, टेकाडी, रानीकुठार धारावासी में प्रारंभिक स्तर पर देखा जा रहा था कि ग्राम पंचायत की कार्यप्रणाली एवं ग्रामसभा का महत्व केवल पुरूष पंचो तक ही था या फिर कुछ प्रभावशाली लोगों तक ही सीमित था । पंचायत की बैठकों या ग्राम सभाएं जहॉ पर हो रही थीं वह समाज के कुछ सत्ताधारी व्यक्तियों तक ही सीमित था। समुदाय के साथ बातचीत करने पर यह निकलकर आ रहा था कि ग्राम सभा तो गॉव के पंच/संरपच सचिव की है और उन्हीं की चलती है उसमें हमारा क्या काम हमें तो कुछ कहने का अवसर ही नही मिलता तो क्या करेंगे । वहॉ जा कर उसी प्रकार पंचायत की बैठकों में केवल पुरूष पंचो का बोल बाला था महिला पंचों की कुछ सुनवाई नहीं होती और ना ही उन्हें कोई बोलने का अवसर दिया जाता। अतः उनकी रूची बैठक में जाने की नही होती उन्हें केवल प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के वक्त ही रखा जाता है कुछ पंचायतो में जैसे – साल्हे, रानीकुठार में महिला पंचो ने पंचायत की एक भी बैठक में भाग नहीं लिया था। ये बातें उन्ही महिला पंचायत प्रतिनिधियों के साथ संस्था कार्यकर्ताओं से बातचीत के दौरान निकल कर आयीं।

परियोजना के तहत संस्था द्वारा समय समय पर महिला पंचायत प्रतिनिधियों का पंचायती राज एवं महिलाओं की भागीदारी पर दो चरणों में महिला पंचायत प्रतिनिधियों का प्रशिक्षण सामुदायिक स्वास्थ्य, ग्राम सभा एवं पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने का उद्वेश्य से प्रशिक्षण का आयोजन सभी 6 पंचायतो में किया गया और इसके अलावा समय समय पर संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा पंचायत की बैठको में उपस्थित रहकर पंचों के साथ पंचायती राज व्यवस्था एवं सामुदायिक सहभागिता जैसे विषयों पर परामर्श पूर्ण चर्चा की जाती रही तथा इसके अलावा महिला पंच प्रतिनिधियों के साथ अलग से वार्डसभा कर उन्हें परामर्श देते हुए पंचायती राज व्यवस्था पर पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जाती रही है जिसके परिणाम स्वरूप महिला पंच प्रतिनिधियों का हस्तक्षेप बढ़ा एवं उन्होंने प्रतिनिधियों को मासिक बैठक में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अपना प्रतिनिधित्व करना प्रांरभ किया जिसका अच्छा उदाहरण ग्रामपंचायत साल्हे की सरंपच श्रीमती आरती भैरम, रानीकुठार पंचायत से वार्ड पंच श्रीमती डुलनबाई राहंगडाले धारावासी से श्रीमती प्रेमबती उइके, बहियाटिकुर से श्रीमती सम्पता, राधिका मेश्राम, मरेरा से बिरजी बाई मेश्राम, वर्तमान समय में सभी 6 पंचायतों में महिला पंच प्रतिनिधियों द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य एवं महिलाओं के हितों पर ग्रामपंचायत की बैठकों में बातें होने लगी है। इसका अच्छा उदाहरण ग्राम स्वास्थ्य समिति में महिला पंच की अध्यक्षता एवं सहयोग को देखा जा सकता है ।

इसी तरह ग्राम सभा की स्थिति भी थी सभी पंचायतों के गॉवों में ग्रामसभा का आयोजन बस नाम मात्र था समुदाय की सहभागिता बिल्कुल नही थी सत्ता पक्ष अपनी इच्छा से ग्रामसभा का आयोजन करता एवं अपने लोगों की ग्रामसभा पंजी में घर घर जाकर हस्ताक्षर करवा लिया जाता था ऐसी स्थितियों में संस्था कार्यकर्ताओं द्वारा समुदाय में ग्राम सभा के प्रति जन जाग्रति लाने के लिए प्रयास किया गया। इसके लिए प्रत्येक गॉव के स्व सहायता समुह की बैठक में ग्राम सभा के महत्व पर परामर्श दिया जाता गॉव में ग्राम सम्पर्क या गृह ग्राम सभा के महत्व एवं ग्राम सभा के अधिकार एवं सामुदायिक सहभागिता पर परामर्श दिया गया इसके अलावा समय–समय पर जागरूकता अभियान तथा ग्रामसभा संपर्क अभियान किये गये इसके अलावा छोटी छोटी वार्ड सभाओं में भी ग्राम सभा और आम व्यक्ति का हक और अधिकार पर लोगों की समझ बनाने का प्रयास किया गया इसके साथ ही साथ गॉव के स्व सहायता समूह की बैठकों में भी ग्रामसभा और उसका महत्व तथा अपनी सहभागिता तथा सहयोग पर समझ बनाने का निरन्तर प्रयास किया गया जिसके परिणाम स्वरूप ग्राम सभा में महिलाओं की उपस्थिति एवं सहभागिता बढी जैसे – बहियाटीकुर की ग्रामसभा में गॉव की एक भी महिलाऍ नहीं जाती थी किन्तु इस बार 2 अक्टूबर की ग्रामसभा में महिलाओं की उपस्थिति देखी गई ।

आगे भी इसी तरह समुदाय में जनजाग्रति हेतु अभियान व निरन्तर ग्राम सभा के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तो निश्चित ही प्रत्येक ग्राम में आम सहमति से ग्रामसभा का आयोजन सुनिश्चित हो सकेगा।

परियोजना प्रबंधन

तय रणनीति और नियोजित कार्यक्रम के अनुसार परियोजना का कियांवयन किया जा रहा है, प्रत्येक माह परियोजना निदेशक और परियोजना समन्वयक की बैठकों में कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा तय की जाती है और उसी के अनुसार कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक तीन माह में एक बार परियोजना की समीक्षा बैठक का आयोजन किया जाता है जिसमें क्या कार्य संपादित किये गये और क्या आगे करना पर व्यापक विचार किया जाता है। परियोजना के परिणामों की ओर पॅंहुच पर जिस निगरानी पद्धति का विकास किया गया है उसे अद्यतन किया जाता है गुणात्मक और संख्यात्मक परिणामों को नापा जाता है। इन सभी बैठकों में परियोजना स्टॉफ खुलकर अपने विचार रखते हैं और सर्वानुमति के अनुसार ही कार्य किया जाता है। परियोजना के बेहतर कियांवयन को सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक स्टॉफ को नवाचारों की स्वतंत्रता दी गयी जिससे काफी अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं।

परियोजना स्टॉफ की क्षमतावृद्धि

समुदाय में कार्य करने हेतु स्टॉफ की क्षमताओं में वृद्धि आवश्यक है उनके ज्ञान और जानकारी के स्तर को बनाये रखने के लिए संस्था प्रत्येक स्टॉफ को प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती है। छोटी अवधि के या दीर्घ अवधि के क्षमता विकास कार्यक्रमों में स्टॉफ को भाग लेने के अवसर दिये जा रहे हैं। परियोजना में स्टॉफ की क्षमता विकास के सीमित अवसर होने के कारण अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षणों का लाभ अवश्य परियोजना स्टॉफ को प्राप्त हुआ है। संस्था के स्थानीय, राज्य और राश्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ बेहतर संबंध और तालमेल है अतः इसका लाभ परियोजना स्टॉफ को प्राप्त हुआ है। संस्था ने एम.पी.व्ही.एच.ए. इंदौर द्वारा आयोजित चार चरणों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में परियोजना समन्वयक और प्रशिक्षण समन्वयक को भाग लेने का अवसर प्रदान किया जिससे उनके कार्य करने के तरीके और विशयों पर जानकारी भी बढ़ी है। इस प्रशिक्षण में स्वैच्छिक संस्थाओं के विकास और उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर स्टॉफ की क्षमताओं का विकास संभव हुआ। साथ ही भोजन के अधिकार, सूचना के अधिकार और रोजगार के अधिकार पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी समुदाय स्तर के स्टॉफ को भाग लेने का अवसर संस्था की ओर से उपलब्ध कराया गया। संस्था भी चाहती है कि जिन स्टॉफ की क्षमताओं के विकास पर समय और संसाधन लगाये गये हैं उनका लाभ लंबे समय तक लोगों को मिल सके। क्योंकि स्वैच्छिक संस्थाओं में कार्य करने के लिए कार्यकर्त्ताओं की तैयारी अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। संस्था इस क्षेत्र में काफी सफल रही है।

सहयोगी संस्थाएं

परियोजना का प्रारंभ दो स्थानीय सहयोगी संस्थाओं स्वास्थ्य संरक्षक समिति, वारासिवनी और ग्रामीण विकास मंडल परसवाडा के साथ प्रारंभ किया गया। प्रथम वर्ष में परियोजना का क्रियांवयन आपसी तालमेल और एक दूसरे से सीखने की प्रवृति के आधार पर कार्य किया गया किसी प्रकार के मतभेद सामने नहीं आये जबकि ग्रामीण विकास मंडल के कार्यों में शिथिलता देखी गयी थी और उन्हें परियोजना स्टॉफ में बदलाव का सुझाव दिया गया था। क्योंकि ग्रामीण विकास मंडल के सहयोगी समन्वयक संस्था की अन्य परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करने की वजह से इस परियोजना पर अधिक समय नहीं दे पा रहे थे। बैठकों में इस विषय पर चर्चाएं भी हुई थी और कुछ सहमति भी बनी।

इस बीच ग्रामीण विकास मंडल के कुछ बोर्ड सदस्यों ने संस्था में संपर्क कर परियोजना के संबंध में जानकारी मांगी और बताया गया कि श्री गुलाब शरणागत द्वारा गलत तरीके से बोर्ड के सदस्यों को बदलने का प्रयास किया है और कुछ सदस्यों को बदल भी दिया है। इस संबंध में स्वास्थ्य संरक्षक समिति और सी.डी.सी. की ओर से काफी बार वास्तविक स्थिति को सामने रखने का निवेदन ग्रामीण विकास मंडल से किया गया पर उन्होंने इस पर कुछ भी जानकारी नहीं दी। साथ ही परियोजना के आंतरिक मूल्यांकन जो कि परियोजना टीम के सदस्यों द्वारा किया गया, इस मूल्यांकन से निकल कर आया कि जी.वी.एम. द्वारा किये जा रहे कार्यों में गंभीरता नहीं है और परियोजना स्टॉफ भी ठीक तरीके से कार्य नहीं कर रहे हैं। इन सब बातों और बोर्ड से संबंधित मुद्दे पर चर्चा हेतु श्री शरणागत को बैठक में आमंत्रित किया गया पर उन्होंने रूचि नहीं दिखायी। इस तरह संस्था की ओर से एस.डी.टी.टी. को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए आगे का अनुदान बंद करने का निवेदन किया गया। यह एक कठोर निर्णय था पर शायद प्राप्त होने वाले संसाधनों के दुरूपयोग को रोकने के लिए यह आवश्यक था।

इस तरह अब परियोजना में सिर्फ दो संस्थाएं लालबर्रा और वारासिवनी विकासखंड में कार्य कर रही हैं। दोनों संस्थाओं के बीच बेहतर तालमेल के साथ कार्य किया जा रहा है, संस्थाओं के बीच एक दूसरे के कार्यों को प्रभावी और रचनात्मक बनाने का प्रयास किया जाता है। स्वास्थ्य संरक्षक समिति के लिए यह कार्य करने का पहला अवसर है और संस्था ने गंभीरता से अपने प्रयास किये हैं और लगातार सीखने की प्रवृति बनी हुई है। संस्था का आधार और पॅहुच परियोजना क्षेत्र में बढ़ी है।

चुनौतियॉ और अवसर

परियोजना के क्रियांवयन के दौरान विभिन्न चुनौतियॉ सामने आती हैं जो हमारे कार्यों को प्रभावित करते है जिसका असर परियोजना के परिणामों पर पडता है। कुछ प्रमुख चुनौतियॉ जो परियोजना स्टॉफ द्वारा महसूस और देखी गयीं।

- आदिवासी और कमजोर वर्ग अपनी आजीविका के प्रति ज्यादा चिंतित हैं जो स्वास्थ्य और स्थानीय स्वशासन के मुद्दे से ज्यादा प्रभावी है। ग्रामसभा में उपस्थिति तो बढ़ी है पर पंचायतों की भूमिका भाासकीय तंत्र की जटिल प्रक्रियाओं के जाल में उलझ गयी है। सरपंच ना चाहते हुए भी ऐसे कार्य करते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए।
- पंचायतों में कार्यों का बोझ बढ़ गया है पर उनकी क्षमताओं के विकास पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है । बहुत सी योजनाएं और कार्य सरपंच और ग्राम सचिव के पास ही केंद्रित हो गये हैं उनका विकेंद्रीकरण नहीं किया जा रहा है। सरपंच का अधिकाधिक समय जनपद पंचायत और मुख्य कार्यपालन अधिकारी के चक्कर लगाने में बीत जाता है उसका गॉव में मिलना काफी मुश्किल हो रहा है।
- सरकारी तंत्र में लोगों का नजरिया सरपंच और पंचायतों के प्रति नकारात्मक ही है इसमें बदलाव लाना काफी जटिल होता जा रहा है। लोगों का विश्वास पंचायत व्यवस्था में है पर कुछ ऐसे उदारहण नहीं दिखायी देते जहॉ अंतिम व्यक्ति को महत्व मिलता हो।
- बहुत सी शासकीय परियोजनाएं प्रारंभ होने संस्था के स्टॉफ अधिक वेतन प्राप्त होने के कारण संस्था छोड देते हैं जिससे कार्य प्रभावित होता है, संस्था के पास विकल्प मौजूद नहीं होते कि वेतन में वृद्धि की जाये।

अवसर

- कुछ शासकीय कार्यक्रम जैसे एन.आर.एच.एम. / एन.आर.ई.जी.ए आदि परियोजना को प्रभावी बनाने में लोगों के बीच जाने में सहयोगी हुए हैं।
- महिला समूहों का सशक्तिकरण धीरे धीरे परियोजना के मुद्दों को प्रभावी रूप लागू करने में मददगार होगा।
- दो वर्ष का कार्यानुभव आगामी वर्षों में और अच्छे से कार्य करने में सहयोग करेगा, संस्था की पॅहुच लोगों के बीच बढ़ी है।

दस्तावेजीकरण

परियोजना के प्रत्येक कार्यक्रमों का विधिवत दस्तावेजीकरण किया जाता है साथ ही समुदाय में सीखने सिखाने की सामग्री का विकास के प्रयास भी समय समय पर दस्तावेजीकरण समन्वयक द्वारा किये जाते हैं। इस वर्ष में परियोजना द्वारा विकसित किये गये प्रमुख दस्तावेज निम्न हैं

- **सामूदायिक स्वास्थ्य नियोजन मार्गदर्शिका** : समुदाय के लिए सामूदायिक स्वास्थ्य नियोजन पर एक मार्गदर्”िाका का विकास किया गया है जिसका प्रयोग आगामी वर्श में ग्राम स्वास्थ्य समितियों के साथ किया जावेगा।
- **निर्मल ग्राम बनाने के 10 चरण** : परियोजना द्वारा एक खूबसूरत जानकारी का पैक तैयार किया गया है जो कि सभी पंचायत प्रतिनिधियों और ग्रामवासियों के लिए उपयोगी होगा। इस सूचना पैक में निर्मल ग्राम कैसे बनाये इसे 10 चरणों में बताया गया है। इस पैक को विकसित कर जिला पंचायत को उपलब्ध कराया गया है जिससे वे अधिक मात्रा में इसका विकास करे और समुदाय में वितरित करें।
- **निर्मलग्राम पर लद्यु फिल्म** : परियोजना द्वारा जिला पंचायत के समग्र स्वच्छता अभियान ईकाई के आग्रह पर जिले के ग्राम गर्रा पर एक लद्यु फिल्म बनायी गयी है इस फिल्म का प्रदर्शन परियोजना के अलावा पंचायतों द्वारा ना सिर्फ परियोजना क्षेत्र में बल्कि जिले की लगभग 400 पंचायतों में किया गया है।
- **संस्था की वेबसाईट निर्माण** : संस्था ने वन वर्ल्ड साउथ एशिया के सहयोग से सी.डी.सी. की वेबसाईट का निर्माण किया है। इसके निर्माण में दस्तावेजीकरण समन्वयक की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वेबसाईट निर्माण की प्रशिक्षण कार्यशाला जो दिल्ली में आयोजित की गयी थी इस प्रशिक्षण में प्रतिभागिता के फलस्वरूप वेबसाईट का विकास संभव हो पाया।
- **सफल प्रयासों पर पुस्तिका** : परियोजना के हस्तक्षेप के फलस्वरूप दिखायी देने वाले सुखद परिणामों को दस्तावेज का स्वरूप देने का प्रयास किया जा रहा है जो हमारी और समुदाय की सीख के काम आवे इस पर कार्य जारी है आ”ाा है सफल प्रयासों के संकलन की पुस्तिका आगामी तीन माह में संभव हो सकेगी।

ग्रामसभा से पहली मुलाकात

लालबर्रा ब्लाक के साल्हे गॉव मे सी डी सी कार्यकर्ता द्वारा सृजन समूह की बैठक रखवाई गई जब बैठक लेने ग्राम साल्हे पहुचे तो ग्राम सचिव के माध्यम से पता चला कि आज ग्राम साल्हे मे जल अभिषेक अभियान के लिये ग्राम सभा में आमंत्रित किया गया है सचिव की ओर से हमें ग्राम सभा में बुलाया गया पहले तो हमने सृजन समूह की बैठक ली एवं सृजन सदस्यों को ग्राम सभा में चलने के लिये कहा गया लेकिन वे लोग ग्राम सभा के बारे में जानते नही थे एवं ग्राम सभा में जाने से डर रहे थे वे कहते है की ग्राम सभा में बच्चो का क्या काम फिर हमने उन्हें बताया कि किसी भी ग्राम के स्त्री व पुरूष जो 18 वर्ष के हो चुके हैं ग्राम सभा के सदस्य होते हैं और वे ग्राम सभ में जा सकते हैं। साथ ही अपनी या अपने ग्राम की समस्यायें रख सकते हैं तब वे हमारे साथ ग्राम सभा में चलने के लिये तैयार हो गये। वहॉ लगभग एक घंटा ग्राम सभा की प्रक्रिया देखते रहे ग्राम सभा में जल अभिषेक अभियान के कर्मचारी द्वारा जानकारी दी गई कि हमारे देश में जल स्तर हर साल कम होता जा रहा है जो आगे चलकर हमारे लिये पीने के पानी की समस्या खडी कर सकता है अतः हमे बारि”ा के पानी जगह जगह पर रोकना है जो रिस कर जमीन में जायेगा जिससे जमीन का जल स्तर बढेगा इसके साथ ही ग्राम के कई लोगों ने अपनी समस्यायें रखे फिर हम लोग वापिस आये एंव सृजन समूह सदस्यों के साथ ग्राम सभा के अनुभव पूछे उन्होने बताया कि ग्राम सभा में जाने से उनको बहुत सारी जानकारी मिली और अब आगे से हम लोग ग्राम सभा में जायेगें तथा अपनी समस्या ग्राम सभा मे रखेंगे हमने उन्हें समझाया कि आप लोग अपने साथ अपने परिवार के लोगों साथ ही मोहल्ले के लोगों को भी ग्राम सभा मे लाने का प्रयास करेगें इस प्रकार हमारे द्वारा सृजन समूह के सदस्यों की ग्राम सभा पर समझ बनी ।

सफल प्रयास

लालबर्रा विकासखंड से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित टेकाडी पंचायत जो वनों व पहाडी से घिरी हुई है यह आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है इस पंचायत के तीन ग्राम है चिखलाबड्डी, नवेगाव और सिलेझरी पहुंच विहीन क्षेत्र है । इस पूरे क्षेत्र में आदिवासी बैगा लोग निवास करते है कार्यकर्ता के द्वारा टेकाडी पंचायत का भ्रमण किया गया लोगों से संपर्क के दौरान पूछा गया कि आप लोग अपनी आजीविका के लिये क्या करते हैं लोगों के द्वारा बताया गया कि हम लोग मजदूरी करते हैं तथा तालाब में सब्जियॉ उगाते व बेचते हैं और इसी से अपना जीवन यापन करते हैं जब उनसे रोजगार गांरटी योजना के बारे में पूछा गया तो बताया की इस योजना की कोई जानकारी नहीं है तब कार्यकर्ता के द्वारा बताया गया कि राजगार गांरटी योजना कानून है जो गावो व ग्रामवासियों की सिथिति में सुधार लाने के लिये है इस योजना के अंर्तगत प्रत्येक परिवार को साल मे सौ दिनों का रोजगार मिल सकता है यह मांग आधारित काम है और यह मागने पर ही दिया जायेगा इसके लिये पंचायत मे एक आवेदन लगाना होता है अगर मांगने पर 15 दिनों के अंदर काम नही मिला तो बेरोजगारी भत्ता का भी प्रावधान है इस तरह ग्राम पंचायत टेकाडी मे कार्यकर्ताओ के प्रयासो से लगभग 65 आवेदन लगवाये गये और सडक निर्माण का काम खुला लोगों को काम तो मिला ही साथ ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुये और 65 परिवारों को रोजगार मिला।

प्रयास जो सफल ना हो सका

लालबर्रा विकास खण्ड से 12 किमी. की दूरी पर ग्राम पंचायत धारावासी है यह ग्राम मुख्य सडक से 2 कि.मी. अन्दर की ओर बसा है धारावासी ग्राम पंचायत का एक आश्रित गॉव केवाटोला है केवा टोला में अधिकांश आदिवासी परिवार के लोग निवास करते हैं और इन परिवारों की आजीविका कृषि एवं कृषी मजदूरी है तथा शेष समय में पलायन करते हैं । गॉव में अनपढ से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट तक पढ़े लिखे युवा लोग हैं और ये सभी बेरोजार हैं गॉव में इन युवा बच्चों ने अपने बडे लोगों को कच्ची शराब निकालते देखा तो उन्हें भी शराब निकालने की सूझी और एक के बाद एक करके केवाटोला के सभी द्यारों के बच्चे ने शराब निकालना चालू कर दिया बच्चो को शराब निकालने एवं उन्हें बेचने से बच्चों की आय के साधन बढ गये किन्तु आय बढने से उनके आदतों में भी बदलाव आने लगा और उनकी स्थिति दिन ब दिन बिगडने लगी इस बात को गॉव के नव दुर्गा स्व–सहायता समुह की बैठक में रखा गया कि हमारे

गॉव के बच्चे भी बडों की देखा देखी शराब निकालते हैं एवं बेचते हैं जबकि अभी उनके पढने लिखने के दिन हैं उन्हे बुरी आदतों से दूर रहना चाहिए ।

नव दुर्गा स्व–सहायता समुह की अध्यक्ष शान्ता पटले एवं ज्ञानवन्ती उइके ने उनका विरोध किया और कहा कि गॉव में कोई भी व्यक्ति कच्ची शराब नहीं बनायेगा और समुह की महिलाओं ने निर्णय लिया और गॉव में सभी को बताया । शराब निकालने के काम में जुडे पुरूषों ने महिलाओं के निर्णय को नहीं माना एवं उन्हें उल्टा गाली गलौच करने लगे यह बात पूरे केवाटोला में फैल गई और गॉव के लोग ने समुह की महिलाओं को गाली गलौच किया और कहा कि हम लोग शराब निकालेंगे हमें कोई नहीं रोक सकता यह विरोध महिलाओं ने सामुहिक रूप से भी किया किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली बल्कि अपमानित होना पड़ा इससे महिलाओं का आत्म विश्वास कम हुआ। अब संस्था के कार्यकर्त्ता पुनः प्रयास कर रहे हैं कि महिलाओं की आवाज बुलंद हो।

परामर्श और टीकाकरण

लालबर्रा विकासखंड के ग्राम पंचायत रानीकुठार जो कि मुख्यालय से 15 कि.मी. की दूरी पर वनक्षेत्र से लगा हुआ स्थित है। ग्राम पंचायत का एक आश्रित ग्राम है देवगांव। इस गॉव के अधिकांश परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करते हैं। यहॉ पर अनुसूचित जाति व जन जाति की जनसंख्या अधिक है।

लोग अपना जीवन निर्वाह कृषिकार्य कृशि मजदूरी तथा वनों का दोहन कर जैसे बॉस से अगरबत्ती की काड़ी बनाना, तेदूपत्ता महुआ जलाउ लकड़ी चार पत्तों से पतली बनाकर अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। इसी गांव में बाबूलाल खरोले का परिवार निवास करता है। जिनके परिवार में दो लडकियां और एक लड़का है। इन्होंने अपनी लडकी रीमा का विवाह 18 वर्श की उम्र में ही कर दिया। और उसके बाद एक के बाद एक छः लड़कियों ने जन्म लिया। स्थिति यह रही कि बच्चों के बीच 15 से 20 माह का अंतर ही रहा जिससे एक बच्चा संभल भी नहीं पाता और दूसरा गोद में आ जाता। परिवार लडके चाहत और पारिवारिक दबाव से यह स्थिति निर्मित हुई।

इस बार रीमा खरोले ने छटवी लडकी को जन्म दिया हर बार की तरह इस बार भी प्रसव की कोई तैयारी न होने के कारण दाई को बुलवाकर घर पर ही प्रसव कराया गया। जबकि आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा नियमित परामर्श दिया जा रहा था। इस बार फिर जब लड़की ने जन्म लिया जबकि परिवार की चाह लड़के की थी तो परिवार ने कोई दायित्व नहीं निभाया। और रीमा को उसके हाल में छोड़ दिया। लड़की तीन माह की हो गई पर कोई बच्ची को ना तो टीकाकरण कार्ड बना और ना ही टीके लगे।

संस्था कार्यकर्ता को गृहभेंट के दौरान मालूम हुआ कि कार्ड नहीं बना हुआ है कोई टीका भी नही दिया गया है, तो रीमा से बात की और टीकाकरण के महत्व को समझाया साथ ही परिवार के सदस्यों को भी समझाया गया। और आंगनवाडी केंद्र में संपर्क और सलाह की बात कही गयी।
किन्तु टीकाकरण के दिन भी रीमा ने अपनी बच्ची को टीका लगवाने नहीं लाई। यह देखने पर संस्था कार्यकर्ता के द्वारा पुनः टीकाकरण के दिन पहले गृहसम्पर्क कर समझाया एवं बच्ची टीका नहीं लगवाने से होने वाली बीमारियों के संबंध में विस्तार से समझाया गया। अगले दिन आने वाले टीकाकरण दिवस पर रीमा ने अपनी बच्ची को केन्द्र में लाकर बी.सी.जी, डी.पी.टी प्रथम और पोलियो की बूंद पिलाई। और आगे के सभी टीके नियमित लगवाने की बात की।

फिल्म प्रदर्शन से प्रेरणा

धारावासी ग्राम पंचायत के आश्रित ग्राम मौसमी में संस्था सी.डी.सी बालाघाट स्वसहायता समूह के प्रबंधन व सक्रियता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य एवं विकास की प्रक्रिया से जोड़ने के लिये कार्य कर रही है। इसी क्रम में संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा सामाजोपयोगी फिल्म प्रदर्शन का कार्यक्रम रखा गया। फिल्म देखने गॉव की अन्य महिलाओं के साथ नारी चेतना स्वसहायता की महिलाएं भी पंहुची।

फिल्म प्रदर्शन के दौरान उभरती उमंग फिल्म दिखाई गई जो स्व सहायता समूह प्रबंधन व सक्रियता पर आधारित है। फिल्म में समूह प्रबंधन के लिये अलग अलग जिम्मेदारियॉ बांटी गई थी। और सभी समूह सदस्यों में आपसी सामंजस्य था। वहीं गांव का स्व सहायता समूह नारी चेतना में सारी जिम्मेदारियॉ अध्यक्ष लीलन राणा एवं सचिव मुन्नी पटले को दी गई थी और बाकी सदस्यों की कोई भूमिका नहीं थी। अध्यक्ष सचिव मिलकर ही सारा काम करते थे। उसमें अन्य सदस्यों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। परिणामस्वरूप धीरे धीरे समूह की सहभागिता कम होने लगी। और समूह में बिखराव आने लगा और कुछ दिनों बाद समूह टूट गया। जब इस समूह ने फिल्म देखा तो इससे उन्हें प्रेरणा मिली की समूह की महिलाओं को अपना संगठन मजबूत बनाना है और समूह के क्रियान्वयन के लिये अलग अलग जिम्मेदारियॉ बॉटनी है। जिससे सभी को इस बात का अनुभव हो कि वे सब एक हैं और समूह के रूप में हैं। आज की स्थिति में संस्था कार्यकर्ता के द्वारा अनुभव किया कि इस समूह की सारी गतिविधियॉ संगठित होकर की जा रही है और सभी की भूमिका बन रही है।

पलायन ! अब और नहीं

ग्राम टेकाडी में लोगों के रोजगार की स्थिति दयनीय है क्योकि पिछले 1 साल से यहॉ कोई भी रोजगार पंचायत द्वारा उपलब्ध नहीं कराया गया था । जिससे इस ग्राम में पलायन की स्थिति बन गई थी जिसमें 12 परिवार में पलायन भी कर चुका था इस ग्राम में जब लोगों से बात कही गई तो सिर्फ 4 दिन का काम जो पिछला काम था वह हुआ उसके बाद कोई भी काम नहीं हुआ।

इस बारे में जब वहॉ की सरंपच श्रीमती इंदिरा टेकाम से बात की गई तो उन्होने कहॉ कि कोई भी काम की मांग को लेकर आवेदन नहीं लगाता हमने आवेदन लगाने सभी को कहा है फिर भी आवेदन नहीं लगाया जाता तो हम क्या कर सकते हैं । इसके बाद जब हम समुदाय से बैठक के दौरान पूछे की काम की आवश्यकता है या नही, तो उसमें कुछ महिलाओं ने कहा की हमें काम की आवश्यकता है क्योकि यहॉ जीविका का साधन कुछ भी नहीं है एवं वहॉ उपस्थित पुरूषों का भी यही कहना था तभी वहा उपस्थित एक व्यक्ति राजू ने हमें गॉव की सम्पूर्ण स्थति से अवगत कराया ।

इस चर्चा के बाद रोजगार गारंटी योजना की जानकारी देते हुये उन्हें इस योजना से लाभ लेने का तरीका बताया एवं उनसे आवेदन लगाने की चर्चा की तथा 15 दिन के अन्दर काम न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता की जानकारी दी । जिसके पक्ष में कुछ महिलाओं ने आवेदन न होने की जानकारी दी जिसमें उन्हें वहा 50 आवेदन दिये गये और इस आवेदन को भरकर पंचायत में देकर पावती लेने को कहा और उस ग्राम में एक दिन के अन्दर 50 आवेदन लगे ।

इसके बाद जब हम 10 दिन बाद उस ग्राम में पहुचे तो पता चला की गॉव में कोई भी व्यक्ति नही हैं पूछने पर पता चला की सभी गॉव को लोग काम में गये हैं जब हम कार्यस्थल पर पहुचे तो वहॉ लगभग 150 लोग तालाब सुधारीकरण के कार्य में लगे थे । इस प्रकार लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ। और जब मजदूरों से हमने बातें की तो उन्होंने कुछ दिन का ही काम बताया तो उन्हें फिर से आवेदन लगाने की सलाह दी गई । आज की स्थिति यह है कि उस ग्राम में नियमित रूप से आवेदन लगाये जा रहे हैं और काम खुल रहा है ।

हमारे बारे में................

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर एक स्वैच्छिक संगठन है जो विकासीय कार्यक्रमों में गति, पारदर्शिता और कार्यक्रमों को लोकोन्मुखी बनाने के लिए समुदाय के साथ कार्य करती है। संस्था बालाघाट, सिवनी और मंडला जिलों में अलग अलग विषयों पर कार्य कर रही है। संस्था मुख्यतः स्थानीय स्वशासी ईकाईयों, सामूदायिक संगठनों के सशक्तिकरण पर कार्य करती है।

हम! लोगों के विकास से जुडे मुद्दे जैसे आजीविका, स्वास्थ्य, महिलाओं का सशक्तिकरण, पर्यावरण आदि विषयों पर कार्य करती है। लोगों के विकास से जुडे उन तमाम विषयों पर शासकीय कार्यक्रमों के बेहतर क्रियांवयन और पॅहुच हेतु प्रचार प्रसार और समुदाय को सक्षम बनाने हेतु संस्था समाज के कमजोर वर्ग के साथ है। संस्था ना सिर्फ स्वयं कार्य करती है बल्कि स्थानीय संगठनों जैसे स्वयं सहायता समूह, युवा समूह अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं की क्षमता विकास और कार्य के अवसर उपलब्ध कराती है। हमारे लक्षित समूह के अंतर्गत बच्चे, महिलाएं और आदिवासी समुदाय आते है।

संस्था शोधकार्य, अध्ययन और प्रशिक्षण के कार्य भी करती है, स्वैच्छिक संस्थाओं के बीच सूचनाओं के आदान प्रदान और सहयोग हेतु संस्था नेटवर्क बना कर कार्य कर रही है।

कम्युनिटी डेव्हलपमेंट सेंटर
महर्षि विद्या मंदिर के सामने
लोधी छात्रावास के पास
भटेरा, बालाघाट म.प्र. 481 001